|| अंतरी पेटवू ज्ञान ज्योत ||

उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय,जलगाँव

भाषा अध्ययन प्रशाला एवं अनुसंधान केन्द्र

हिन्दी विभाग

एम.ए. हिन्दी : परिवर्तित पाठ्यक्रम

प्रथम एवं द्वितीय वर्ष

प्रथम वर्ष प्रारंभ अगस्त 2022

द्वितीय वर्ष प्रारंभ जुलाई 2023-24

Department of Hindi, School of Language Studies & Research Centre
Kavayitri Bahinabai Chaudhari North Maharashtra University, Jalgaon
Syllabus Under CBCS for M. A. (Hindi)
Syllabus Structure (w. e. f. 2022-23)

Semester I

Course Code	Course Type	Title of the Course	Contact hours/week			Distribution of Marks for Examination						Credits
						Internal		External		Total		
			Th	Pr	Total	Th	Pr	Th	Pr	Th	Pr	
HIN -101	Core	हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN -102	Core	प्राचीन एवं मध्ययुगीन काव्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN -103	Core	भारतीय काव्यशास्त्र तथा आलोचना	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIIN-104 A	Skill Based / Elective	मीडिया लेखन **वैकल्पिक**	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-104 B		भारतीय साहित्य **वैकल्पिक**	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-104 C		कथेतर साहित्य (निबंध एवं व्यंग्य)	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
AC-101	Audit Course	Practicing Cleanliness	--	02	02	--	100	--	--	100	100	02

Workload of Sem. I = 24 Lectures per week

Semester II

Course Code	Course Type	Title of the Course	Contact hours/week			Distribution of Marks for Examination						Credits
						Internal		External		Total		
			Th	Pr	Total	Th	Pr	Th	Pr	Th	Pr	
HIN -201	Core	हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN -202	Core	आधुनिक काव्य : महाकाव्य और खण्डकाव्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-203	Core	पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-204 A	Skill Based / Elective	वैकल्पिक पटकथा लेखन	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-204 B		वैकल्पिक प्रवासी साहित्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-204 C		**वैकल्पिक** महाराष्ट्र का लोक साहित्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
AC-201/202/203/204	Audit Course	Choose one out of four (AC-201/202/203/204) (Personality & Cultural Development Related)	02	--	02	100	--	--	--	100	--	02

Workload of Sem. II= 24 Lectures per week

Semester III

Course Code	Course Type	Title of the Course	Contact hours/week			Distribution of Marks for Examination						Credits
						Internal		External		Total		
			Th	Pr	Total	Th	Pr	Th	Pr	Th	Pr	
HIN -301	Core	कथा साहित्य कहानी एवं उपन्यास	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-302	Core	हिंदी भाषा और उसका विकास	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-303	Core	अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-304 A	Skill Based / Elective	**वैकल्पिक** भाषिक संप्रेषण	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN -304 B		**वैकल्पिक** नाटक एवं एंकाकी	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN -304 C		**वैकल्पिक** तुलनात्मक साहित्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
AC-301/302/303/304	Audit Course	Choose one out of four (AC-301/302/303/304) (Technology + Value added course)	02	--	02	100	--	--	--	100	--	02
			02	--	02	100	--	--	--	100	--	02

AC-303 **हिंदी साहित्य और सिनेमा** / AC-304 **हिंदी वेब पत्रकारिता**

Workload of Sem. III= 28 Lectures per week

Semester IV

Course Code	Course Type	Title of the Course	Contact hours/week			Distribution of Marks for Examination						Credits
						Internal		External		Total		
			Th	Pr	Total	Th	Pr	Th	Pr	Th	Pr	
HIN-401	Core	आधुनिक कविता : लंबी कविता एवं ग़ज़ल	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-402	Core	विमर्शमूलक साहित्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-403	Core	भाषा विज्ञान	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN -404 A	Skill Based / Elective	वैकल्पिक अनुवाद विज्ञान	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-404 B		वैकल्पिक अनूदित साहित्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
HIN-404 C		वैकल्पिक भारतीय संत साहित्य	04	--	04	40	--	60	--	100	--	04
AC-401/402/403/404	Audit Course	Choose one out of four (AC-401/402/403/404) (Professional & Social + Value added course)	02	--	02	100	--	--	--	100	--	02
			02	--	02	100	--	--	--	100	--	02

AC-403 / **रचनात्मक लेखन** AC-404 **वर्तनी तथा प्रूफ शोधन**

Workload of Sem. IV= 28 Lectures per week

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

१. छात्रों में सामाजिक समरसता, मानवीय मूल्य एवं संवेदना, सौहार्द, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकात्मकता आदि को विकसित करने हेतु हिंदी साहित्य की स्तरीय एवं कालजयी साहित्यिक रचनाओं का पाठयक्रम में समावेश कर छात्रों को उनसे अवगत कराना ।

२. छात्रों को हिंदी भाषा ,भाषा विज्ञान ,भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना,सर्जनात्मक साहित्य तथा महाराष्ट्र का लोक साहित्य ,भारतीय साहित्य,तुलनात्मक साहित्य ,अनूदित साहित्य,प्रवासी साहित्य, विमर्शमूलक साहित्य, भारतीय संत साहित्य जैसे विभिन्न साहित्य प्रकारों से छात्रों को परिचित करवाना।

३. छात्रों में रोजगार की दृष्टि से विविध कौशल को विकसित करने हेतु उन्हें प्रयोजनमूलक हिंदी पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता,मीडिया लेखन ,अनुवाद विज्ञान, भाषिक संप्रेषण साहित्य और सिनेमा जगत के साथ-साथ मानक वर्तनी, प्रूफ शोधन,रचनात्मक लेखन जैसे विषयों की जानकारी देना।

४. छात्रों में अनुसंधान कौशल को विकसित करने हेतु समूह चर्चा,सर्वेक्षण,प्रकल्प लेखन एवं प्रस्तुतीकरण जैसी गतिविधियों का पाठ्यक्रम में अतंर्भाव किया गया है।

५.छात्रों में अनुसंधान तथा अनुवाद वृत्ति को विकसित करने हेतु उन्हें अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया की तथा अनुवाद विज्ञान की सैध्दांतिक जानकारी देने के साथ-साथ तृतीय एवं चतुर्थ सत्र में अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया और अनुवाद विज्ञान इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत ४० अंक हेतू प्रात्यक्षिक परीक्षा के अंतर्गत प्रकल्प लेखन भी रखा गया है ।

६. छात्रों में विविध कौशल को विकसित करने हेतु मीडिया लेखन,पटकथा लेखन,भाषिक संप्रेषण,अनुवाद विज्ञान, हिंदी साहित्य एवं सिनेमा, वर्तनी एवं प्रूफशोधन जैसे प्रश्नपत्रों को पाठयक्रम में रखा गया है ।

पाठ्यक्रम से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएँ :

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम की अवधि तीन वर्ष तक रहेगी ।
- प्रथम वर्ष (सत्र-Iऔर सत्र-II) के लिए पाठ्यक्रम का प्रारंभ अगस्त 2022 से तो द्वितीय वर्ष (सत्र - III और सत्र-IV) के लिए पाठ्यक्रम का प्रारंभ जुलाई 2023 से होगा ।
- एक प्रश्नपत्र के लिए 04 तासिकाएँ निर्धारित रहेंगी ।
- प्रत्येक सत्र में प्रथम 03 प्रश्नपत्र अनिवार्य रहेंगे और चतुर्थ प्रश्नपत्र के लिए तीन विकल्प दिए गए हैं जिनमें से किसी एक का चयन छात्रों को करना होगा। छात्रों की उपलब्धता के अनुसार तीनों वैकल्पिक प्रश्नपत्रों का समांतर अध्यापन किया जा सकेगा ।
- उपर्युक्त चार प्रश्नपत्रों के अतिरिक्त छात्रों को प्रत्येक सत्र में विश्वविद्यालय/विभाग द्वारा निर्धारित एक ऑडिट कोर्स पूर्ण करना अनिवार्य है ।
- सत्र के अंत में प्रत्येक प्रश्नपत्र की 60 अंकों की अंतिम परीक्षा होगी | चालीस 40 अंक अंतर्गत मूल्यांकन हेतु रहेंगे |
- अतंर्गत मूल्यांकन हेतु निर्धारित चालीस (40) अंकों का विभाजन निम्न प्रकार से होगा :

अंतर्गत परीक्षा	घटक परीक्षा (Internal Test)	20
	पी.पी.टी. प्रस्तुतीकरण	15
	नियमित उपस्थिति	05
	कुल अंक	40

- सत्रांत परीक्षा ६० अंकों की होगी जिसका स्वरूप निम्न प्रकार से रहेगा :

प्रश्न क्रमांक	प्रश्न का स्वरूप	अंक विभाजन
प्रश्न क्रमांक - 1	दीर्घोत्तरीय उत्तर लिखिए (पाच में से तीन)	45
प्रश्न क्रमांक - 2	ससंदर्भ / टिप्पणियाँ लिखिए (चार में से दो)	15
	कुल अंक	60

- वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course/Skill Based) प्रश्नपत्रों की सत्रांत परीक्षा का स्वरूप निम्न प्रकार से रहेगा :

प्रश्न	प्रश्न का स्वरूप	अंक
प्रश्न क्रं. 1	दीर्घोत्तरीय उत्तर लिखिए (आठ में से छह)	60

- सत्र एक और दो के ऑडिट कोर्स की अंतिम सौ अंको की परीक्षा प्रात्यक्षिक के रूप में संपन्न होगी तथा सत्र तीन और चार के ऑडिट कोर्स की अंतिम सौ अंको की परीक्षा हिंदी विभाग

द्वारा लिखित रूप में आयोजित की जाएगी । संबंधित पाठ्यक्रमों के परीक्षा और प्रश्नपत्र का स्वरूप विषय से संबंधित आचार्य सुनिश्चित करेंगे । ऑडिट कोर्स पाठ्यक्रम की अंतिम परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य हैं परंतु इस परीक्षा में प्राप्त अंक स्नातक उपाधी की अंतिम अंकसूची में नहीं जोडे जायेंगे ।

- प्रश्नपत्र के गठन (Paper Setting) हेतु विभाग के तथा बाहरी विश्वविद्यालय / महाविद्यालय के अध्यापकों का संयुक्त पॅनल गठित किया जाएगा |
- विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर किए जाने वाले बदलावों के अनुसार पाठ्यक्रम तथा परीक्षा पध्दति में बदलाव किया जाएगा |

--------- ||| ----------

प्रथम सत्र पाठ्यक्रम

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN- 101 हिंदी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ **हिंदी साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय करना ।**
- ✓ **हिंदी साहित्य के प्रमुख कालों कों समझना ।**
- ✓ **आदिकालीन , भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन साहित्य की सामान्य प्रवृतियों का अध्ययन करना |**

इकाई - I **हिंदी साहित्येतिहास दर्शन, हिंदी साहित्य इतिहास लेखन की परंपराएँ एवं पध्दतियाँ, हिंदी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण ।**

इकाई - II **आदिकाल : सामान्य परिचय, प्रमुख परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ, आदिकालीन प्रमुख काव्य धाराएँ - सिद्ध साहित्य,नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो काव्य और लौकिक साहित्य । आदिकालीन साहित्य की सामान्य विशेषताएँ ।**

इकाई - III **भक्तिकाल : सामान्य परिचय , सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भक्तिकालीन प्रमुख काव्यधाराएँ - निर्गुण काव्य , सूफी काव्य , राम काव्य और कृष्ण काव्य, प्रमुख कवि और प्रवृत्तियाँ, भक्तिकाल की सामान्य विशेताएँ ।**

इकाई - IV **रीतिकाल : सामान्य परिचय ,सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :- रीतिबध्द्, रीतिसिध्द् और रीतिमुक्त ,रीतिकवियों का आचार्यत्व,रीतिकाल के प्रमुख कवि और उनके काव्य का सामान्य परिचय ।**

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. हिंदी साहित्य का समग्र इतिहास - रामकिशोर शर्मा
२. हिंदी साहित्य का इतिहास -आचार्य रामचंद्र शुक्ल
३.हिंदी साहित्य की भूमिका उद्‌भव विकास- डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी
४.हिंदी साहित्य का इतिहास -डॉ.लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
५.हिंदी साहित्य की प्रवृत्तिया - डॉ. जसकिशन प्रसाद खंडेलवाल
६.हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबु गुलाबराय
७.हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास -डॉ.रामकुमार वर्मा

८.हिंदी रीति साहित्य -डॉ.भगीरथ मिश्र
९.हिंदी साहित्य का इतिहास- सं.डॉ. नगेंद्र
१०.हिंदी साहित्य का आदिकाल - डॉ.हजारीप्रसार द्विवेदी
११.हिंदी गद्य का उद्‌भव एवं विकास- डॉ.उमेश शास्त्री
१२.हिंदी का गद्य साहित्य -रामचंद्र तिवारी
१३.हिंदी साहित्य का इतिहास-डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
१४.हिंदी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास -डॉ.सभापति मिश्र

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-

१. हिंदी साहित्य के इतिहास के नामकरण ,लेखन पद्वतियॉ तथा विभाजन से छात्र परिचित हुए ।
२. हिंदी साहित्य इतिहास के विवेचित कालों को छात्रों ने समझा ।
३. आदिकाल,भक्तिकाल एवं रीतिकाल के साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों का छात्रों ने विस्तृत अध्ययन किया ।

--------- ॥॥ ----------

एम.ए.हिन्दी : प्रथम वर्ष

प्रथम सत्र पाठ्यक्रम

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN 102 प्राचीन एवं मध्ययुगीन काव्य

उद्देश्य

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य विधा का अध्ययन करने से पूर्व उसके तात्विक विवेचन से छात्रों को परिचित करना अपेक्षित है|
2. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य का सामान्य परिचय करना |
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य के विकासात्मक परिचय से अवगत करना|
4. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के विकास को जानना|
5. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कवियों के साहित्यिक एवं सामाजिक योगदान पर प्रकाश डालना|

इकाई - I अमीर खुसरों - पहेलियाँ तथा मुकरियाँ **(०५ पहेलियाँ ०५ मुकरियाँ)**

विद्यापति - विद्यापति पदावली - **(०३ प्रकृति और ०३ श्रृंगार)**

प्राचीन एवं मध्ययुगीन काव्य सं. पूरनचंद टंडन राजपाल प्रकाशन संस्करण 2016

इकाई -II जायसी - पद्मावत - **(बारहमासा वर्णन सं. वासुदेशरण अग्रवाल)**

कबीर -हजारी प्रसाद व्दिवेदी (**आरंभिक दस पद)**

इकाई - III तुलसीदास - रामचरितमानस उत्तरकाण्ड (**भरत मिलाप प्रसंग)**

सूरदास - भ्रमरगीत सार **-पद क्र. 21 से 30 तक**

इकाई - IV बिहारी - काव्य गौरव - सं. रामदरश मिश्र - **प्रथम 5 पद श्रृंगार वर्णन, विरह वर्णन**

भूषण - काव्य गौरव - सं. रामदरश मिश्र - **प्रथम 5 पद**

संदर्भ ग्रंथ -

1) अमीर खुसरो परिचय तथा रचनाएँ- सं. सुदर्शन चोपड़ा, हिन्दी पॉकेट बुक प्रकाशन
2) अमीर खुसरो तथा उनका साहित्य - सं. भोलानाथ तिवारी - प्रभात प्रकाशन , नई दिल्ली
3) कालजयी कवि और उनका काव्य अमीर खुसरो - सं. माधव हांडा - राजमल एण्ड सन्स, दिल्ली
4) विद्यापति की पदावली- सं रामवृक्ष बेनीपुरी, पुस्तक भंडार,पटना, बिहार
5) पद्मावत - सं वासुदेशरण अग्रवाल .,
6) कबीर ग्रंथावली, .सं - शामसुन्दर दास
7) कबीर वाणी पीयूष - सं. डॉ.ठाकुर जयदेव सिंह - विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8) काव्य-संचयन - सं. डॉ. चमनलाल गुप्ता - वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9) कबीर बीजक सं. डॉ. शुकदेव सिंह
10)रामचरितमानस- तुलसीदास, गीताप्रेस, गोरखपुर

11)काव्य गौरव - सं. रामदरश मिश्र .

12)ऑनलाइन कविता कोश - http://www.kavitakosh.org

13)प्राचीन एवं मध्ययुगीन काव्य सं पूरनचंद टंडन राजपाल प्रकाशन संस्करण .**2016**

उपादेयता

1. छात्र प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य विधा का अध्ययन करने से पूर्व उसका तात्विक विवेचन से परिचित हुए|
2. छात्रों को प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य का सामान्य परिचय हुआ|
3. छात्रों को प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य के विकासात्मक परिचय से अवगत कराया गया|
4. छात्रों ने प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के विकास को समझा|
5. छात्रों ने प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कवियों के साहित्यिक एवं सामाजिक योगदान को समझा|

--- ||| ---

एम.ए.हिन्दी : प्रथम वर्ष

प्रथम सत्र पाठ्यक्रम

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN- 103 भारतीय काव्यशास्त्र तथा आलोचना

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ भारतीय काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय देना ।
- ✓ भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धातों से परिचित करना ।
- ✓ हिन्दी आलोचना का सामान्य परिचय प्राप्त कर हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना का अध्ययन करना ।

इकाई - I रस एवं अलंकार सिद्धांत :

रस का स्वरूप,भरतमुनि के रस निष्पत्ति विषयक सूत्र संबंधी विविध आचार्यों का मत,साधारणीकरण सिद्धांत, अलंकार सिद्धांत : अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति,परिभाषा,स्वरूप,प्रकार और काव्य में अंलकार का स्थान |

इकाई - II ध्वनि और रीति सिद्धांत : -

ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि शब्द की व्युत्पत्ति,अर्थ,परिभाषा,ध्वनि और स्फोट ध्वनि में अंतर और ध्वनि के प्रमुख भेद, |रीति शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ, परिभाषा, रीति के विविध पर्याय, रीति भेदों के आधार, रीति भेद, रीति और गुण, रीति और शैली |

इकाई - III वक्रोक्ति और औचित्य सिद्धांत :

वक्रोक्ति शब्द की व्युत्पत्ति,अर्थ,परिभाषा,कुतंकपूर्व वक्रोक्ति सिद्धांत , वक्रोक्ति का स्वरूप,वक्रोक्ति के प्रमुख भेद, काव्य में वक्रोक्ति का महत्व, औचित्य सिद्धांत : औचित्य सिद्धांत का स्वरूप और काव्य में औचित्य का स्थान |

इकाई - IV हिन्दी आलोचना :

हिन्दी आलोचना स्वरूप एवं विकास, प्रमुख हिंदी आलोचकों का सामान्य परिचय : - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी , आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी , डॉ.नगेन्द्र, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. नामवर सिंह आदि |

- **सहायक ग्रंथों की सूची :**

१. काव्यशास्त्र- डॉ. भगीरथ मिश्र

२. रस सिद्धांत : स्वरूप विश्लेषण- डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित

३.भारतीय साहित्य - आचार्य बलदेव उपाध्याय

४. साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत- डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

५.भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत- डॉ. कृष्णदेव शर्मा
६.रस मीमांसा- आचार्य रामचंद्र शुक्ल
७.औचित्य विमर्श- डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
८. समीक्षा के भारतीय एवं पाश्चात्य मानदण्ड- डॉ. रामसागर त्रिपाठी
९. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत- डॉ. सुरेश अग्रवाल
१०. काव्य समीक्षा के भारतीय मानदण्ड- डॉ. वासंती सालवेकर / डॉ.उर्मिला पाटील
११. भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र- डॉ. गोविन्द कुमार टी. बेकरीया.
१२.वक्रोति सिद्धान्त और सूर का काव्य- डॉ. शिवप्रसाद मिश्र
१३.भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र- डॉ. सत्यदेव चौधरी /शांतिस्वरूप गुप्त
१४. उदात्त के विषय में - डॉ. निर्मला जैन
१५. काव्य चिंतन की पश्चिमी परंपरा - डॉ. निर्मला जैन
१६.काव्यार्थ चिन्तन- जी.एस. शिवरुद्रप्पा
१७.वक्रोति सिद्धान्त और सूर का काव्य- डॉ. शिवप्रसाद मिश्र
१८. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र -डॉ.रामकुमार वर्मा

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-**

    १. छात्रों ने भारतीय काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय प्राप्त किया ।
    २. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतो से छात्र अवगत हुए ।
    ३.हिंदी आलोचना से अवगत होकर छात्रों ने हिंदी के प्रमुख आलोचकों की आलोचनाओं का अध्ययन किया ।

---------- ||| ----------

एम.ए.हिन्दी : प्रथम वर्ष

प्रथम सत्र पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course/Skill Based)

HIN- 104 (A) मीडिया लेखन

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ रोजगार की दृष्टि से मीडिया लेखन का अध्ययन कर नयी दृष्टि विकसित करना |
- ✓ मीडिया लेखन की प्रासंगिकता और महत्व को जानना |
- ✓ ईलेक्ट्रॉनिक तथा सोशल मीडिया का उचित लाभ लेने की क्षमता का विकास करना |

इकाई -I समाचार लेखन : समाचार का अर्थ,समाचार के तत्व,समाचार मूल्य,समाचार के प्रकार, समाचार के स्त्रोत,समाचार -लेखन की आवश्यकता , प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता ,समाचार लेखन में आने वाली समस्याएँ |

इकाई -II प्रिंट मीडिया : संपादकीय लेखन ,फीचर लेखन, वार्ता लेखन, विज्ञापन लेखन, साक्षात्कार लेखन, पुस्तक समीक्षा, नाटय समीक्षा, फिल्म समीक्षा, लेखन की प्रविधि और प्रक्रिया उनकी आचार संहिता। |

इकाई - III ईलेक्ट्रॉनिक मीडिया : रेडियो, टी.वी धारावाहिक , फिल्म ,विज्ञापन लेखन एवं उनकी आचार संहिता।

इकाई IV सोशल मीडिया : ब्लॉग लेखन, ई-मेल लेखन, फेसबुक लेखन, व्हॉटस्अप लेखन, ट्वीटर लेखन, हाईक, इन्स्टाग्राम लेखन एवं उनकी आचार संहिता।

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. जनसंचार माध्यम में हिन्दी- चन्द्र कुमार
२. रेडियो लेखन- डॉ. राजेन्द्र मिश्र
३. मीडिया लेखन के सिद्धान्त- डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र
४.मीडिया लेखन के सिद्धान्त-डॉ. एन.सी.पंत
५.मीडिया और हिन्दी-डॉ मधु खराटे, डॉ. हनुमंतराव पाटील, राजेन्द्र सोनवणे
६.मीडिया लेखन- सुमित मोहन
७.संचार माध्यम लेखन- गौरीशंकर रैना
८.मीडिया और समाज- संजय गुलाटी
९.मीडिया भाषा और संस्कृति-कमलेश्वर
१०.मीडिया विमर्श- रामशरण जोशी

११.इण्टरव्यू विधा और विविधा- डॉ बापूराव देसाई
१२.मीडिया की आधुनिक चुनौतियाँ- प्रो-मधुसूदन त्रिपाठी
१३ प्रयोजनमूलक हिन्दी तथा मीडिया लेखन -सं. डॉ. बापूराव देसाई
१४.सृजनात्मक लेखन-हरिश अरोडा
१५.प्रयोजनमूलक हिंदी -डॉ.माधव सोनटक्के
१६. प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका -डॉ. कैलाश नाथ पांडेय
१७.हिंदी वेब साहित्य -डॉ.सुनील कुमार लवटे

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नांकित लाभ हुए :-

१. रोजगार की दृष्टि से मीडिया लेखन का अध्ययन कर छात्रों ने मीडिया लेखन में प्राप्त बहुविध रोजगारों के संदर्भ में जाना ।
२. मीडिया लेखन की प्रासंगिकता ओर महत्व को छात्रों ने समझा।
३.छात्र ईलेक्ट्रॉनिक तथा सोशल मीडिया से परिचित होकर उसका दैनिक जीवन में उचित प्रयोग कर रहे हैं ।

--------- ||| ----------

एम.ए. हिन्दी प्रथम वर्ष

प्रथम सत्र पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम / कौशल विकास संवर्धन (Elective Course/Skill Based)

HIN - 104 (B) भारतीय साहित्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय साहित्य से अवगत कराना |
- ✓ भारतीय भाषाओं में लिखित साहित्य का परिचय कराना |
- ✓ सांस्कृतिक ,सामाजिक तथा भौगोलिक परिवेश में भारतीय साहित्य के मूल्यांकन के विविध दृष्टिकोण छात्रों में विकसित करना |

इकाई - I

- भारतीय साहित्य का स्वरूप
- भारतीय नवजागरण तथा उसका भारतीय साहित्य पर प्रभाव,
- भारतीय साहित्य और राष्ट्रीयता,
- भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब

इकाई - II

- भारतीय साहित्य में अभिव्यक्त जीवनमूल्य एवं वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा
- भारतीय साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता
- भारतीय साहित्य पर महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद का प्रभाव
- भारतीय साहित्य पर महर्षि अरविंद तथा .बाबा साहब अम्बेड़कर.का प्रभाव

इकाई - III प्रातिनिधिक पाठ्यपुस्तक आधुनिक भारतीय कविता – सम्पादक डॉ. अवधेश नारायण मिश्र/ डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय प्रकाशक - विश्वविद्यालय,प्रकाशन,वाराणसी

उपर्युक्त सम्पादित **पुस्तक** में संकलित निम्न भाषा**ओं** के **विभिन्न** कवियों की कविताएँ अध्ययनार्थ रखी गई है :-

- **बांग्ला : 1. रवींद्रनाथ टैगोर - जहाँ चित्त भय शून्य , 2. काज़ी नजरुल – किसका है यह देश ?**
- **असमिया : 3. नवकांत बारुवा- धनशिरी के लिए दो स्तबक 4. हीरेन भट्टाचार्य – अनाज ही सत्य है तुम अनाज की मिसाल हो**
- **ओड़ियॉ : 5. रमाकांत रथ – इच्छा न हो तो भी 6. हरप्रसाद शास्त्री- कविता के विरूध्द कविता**
- **तमिल : 7. सुब्रमण्य भारती- स्वतंत्रता 8. वैरमुत्तु – भूमि पर आए नव शताब्द हे !**
- **गुजराती : 9. उमाशंकर जोशी- छोटा मेरा खेत 10. सितांशु यशचंद्र- आर्शीवाद**
- **मराठी : 11. कुसुमाग्रज – पृथ्वी का प्रेमगीत 12. नारायण सुर्वे - हमारे शब्द**

इकाई - IV प्रातिनिधिक पाठ्यपुस्तक : नागमंडल : गिरीश कर्नाड (नाटक) भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली

- **सहायक ग्रंथ सूची :-**

१. भारतीय साहित्य -डॉ.नगेन्द्र .
२. . भारतीय साहित्य -डॉ.रामछबीला त्रिपाठी
३. भारतीय साहित्य - डॉ.मूलचंद गौतम

४. भारतीय साहित्य अध्ययन की नई दिशाएँ - डॉ.प्रदीप श्रीधर
५. भारतीय साहित्य कोश (चार खण्ड) संपादक - सुरेश गौतम/वीणा गौतम
६. भारतीय साहित्य की अवधारणा - डॉ.राजेन्द्र मिश्र
७. भारतीय साहित्य तुलनात्मक अध्ययन- इन्द्रनाथ चौधरी
८. भारतीय दर्शन- डॉ. उमेश मिश्रा
९.भारतीय काव्य में सर्वधर्म समभाव- सं.डॉ.नगेन्द्र
१०.भारतीय समाज में नारी- सं. रमा शर्मा / एम. के मिश्रा
११. भारतीय संत परंपरा- बलदेव बंशी
१२.भारतीय साहित्य में धर्म और दर्शन के आयाम- सं. डॉ. सैय्यद मेहरून
१३.भारतीय भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता – डॉ. सुनील कुलकर्णी
१४. किस प्रकार की है यह भारतीयता ? यू.आर.अनंतमर्ति संकलन
१५. भारतीय उपन्यास : कथासार : 1-2 प्रभाकर माचवे
१६. भारतीय साहित्य एवं साहित्यकार : अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य – प्रो.डॉ. शशिकांत सोनवणे
१७. समकालीन कविता: जनवादी आयाम – डॉ.संजय रणखांबे

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

- **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-**
  १. राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में भारतीय साहित्य में अभिव्यक्त विविध संकल्पनाओं से छात्र अवगत हुए|
  २. भारतीय भाषाओं में लिखित साहित्य की अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं से छात्र परिचित हुए|
  ३. सांस्कृतिक ,सामाजिक तथा भौगोलिक परिवेश में भारतीय साहित्य के मूल्यांकन के विविध दृष्टिकोण छात्रों में विकसित हुए|

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

द्वितीय *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-104 (C) कथेतर साहित्य (निबंध और व्यंग्य साहित्य)

पाठयक्रम का उददेश्य

- ✓ **कथेतर साहित्य का सामान्य परिचय से छात्रों को अवगत कराना।**
- ✓ **निबंध साहित्य का विकासात्मक परिचय कराना।**
- ✓ **व्यंग्य साहित्य का विकासात्मक परिचय कराना।**
- ✓ **व्यंग्य साहित्य का विकासात्मक परिचय कराना।**
- ✓ **निबंध, और व्यंग्य साहित्य की प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन करना।**

इकाई – I निबंध साहित्य : सैध्दांतिक विवेचन

- **निबंध साहित्य : परिभाषा एवं स्वरूप विवेचन**
- **हिन्दी निबंध का उदभव एवं विकास**
- **हिन्दी निबंधों के प्रमुख प्रकार एवं विशेषताएँ**
- **प्रमुख निबंधकारों का सामान्य परिचय**

इकाई- II प्रातिनिधिक हिन्दी निबंध :-

- शिवमूर्ति : प्रतापनारायण मिश्र
- शिवशंभु के चिटठे : बालकृष्ण भटट
- कविता क्या है : रामचंद्र शुक्ल
- नाखून क्यों बढ़ते हैं : हजारी प्रसाद व्दिवेदी
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है : विद्यानिवास मिश्र
- मजदूरी और प्रेम : अध्यापक पूर्ण सिंह
- संस्कृति और सौंदर्य : डॉ नामवर सिंह
- रामकथा की सांस्कृतिक यात्रा : श्रीराम परिहार

इकाई – III व्यंग्य साहित्य : सैध्दांतिक विवेचन

- **व्यंग्य साहित्य :शब्दगत व्युत्पत्ति, परिभाषा एवं स्वरूप विवेचन**
- **व्यंग्य से संबंधित शब्दावली तथा व्यंग्य के प्रमुख तत्व**
- **हिन्दी व्यंग्य साहित्य उदभव एवं विकास**
- **प्रमुख हिन्दी व्यंग्य साहित्यकारों का सामान्य परिचय**

इकाई – IV प्रातिनिधिक हिन्दी व्यंग्य संकलन :- उत्कृष्ट व्यंग्य रचनाएँ – (भाग -1) - प्रेम जनमेजय
यश पब्लिकेशंस नई दिल्ली 110032

- **स्वर्ग में विचार-सभा का अधिवेशन – भारतेन्दु हरिश्चंद्र**
- **मोटेराम जी शास्त्री- प्रेमचंद**
- **मेरा मकान –गुलाबराय**
- **बनारस में पिगसन -बेढब बनारसी**
- **मैं लेखक से प्रकाशक क्यों बना ? –पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'**
- **अकाल उत्सव- हरिशंकर परसाई**

- जीप पर सवार इल्लियाँ-शरद जोशी
- जूते सिलवाते हुए – लतीफ घोंघी

❖ संदर्भ ग्रंथ सूची :

- छायावादोत्तर हिन्दी गद्य साहित्य – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- हिन्दी के प्रतिनिधिक निबंधकार – डॉ.व्दारिकाप्रसाद सक्सेना
- हिन्दी निबंधों का शैलीगत अध्ययन – डॉ.मु.ब.शहा
- प्रतिनिधिक हिन्दी निबंधकार – डॉ हरि मोहन
- उत्कृष्ट व्यंग्य रचनाएँ – (भाग -1) - प्रेम जनमेजय
- उत्कृष्ट व्यंग्य रचनाएँ – (भाग -2) - प्रेम जनमेजय
- व्यंग्य चिंतना और शंकर पुणतांबेकर- डॉ.सुरेश माहेश्वरी
- हिन्दी व्यंग्य परंपरा में शंकर पुणतांबेकर का योंगदान-प्रा.अनुपमा प्रभुणे
- स्वातंत्र्योत्तर हि न्दी व्यंग्य निबंध –डॉ.शशि मिश्रा
- शंकर पुणतांबेकर (शोध प्रबंध) - डॉ.मीना भंडारी,कल्याण
- व्यंग्य के परिप्रेक्ष्य में शंकर पुणतांबेकर के साहि त्य का मूल्यांकन (शोध प्रबंध) -डॉ.जितेन्द्र नाना कोले
- शैलीकार डॉ.शंकर पुणतांबेकर –डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
- डॉशंकर पुणतांबेकर. एक अध्ययन - डॉ ओमप्रकाश शर्मा ./ डॉसुनील कुलकर्णी .

❖ पाठयक्रम की उपादेयता :

- कथेतर साहित्य के सामान्य परिचय से छात्रों को अवगत किया गया।
- निबंध साहित्य का विकासात्मक परिचय दिया गया ।
- व्यंग्य साहित्य विधा का सैध्दांतिक परिचय प्राप्त हुआ।
- व्यंग्य साहित्य विधा का विकासात्मक परिचय प्राप्त हुआ ।
- निबंध, और व्यंग्य साहित्य की प्रतिनिधिक रचनाओं का अध्ययन किया गया ।

--- ॥॥ ---

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

द्वितीय *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-201 हिंदी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- आधुनिक काल के प्रमुख काव्य प्रकारों की प्रवृत्तियों के विश्लेषण की दृष्टि छात्रों में निर्माण करना ।
- आधुनिक काल के कथा साहित्य तथा कथेत्तर साहित्य का विकासात्मक परिचय बताना।
- विमर्शमूलक साहित्य तथा प्रवासी साहित्य का अध्ययन करना ।

इकाई -I आधुनिक काल :

- काव्य विधा का विकासात्मक परिचय : भारतेन्दु युगीन काव्य , द्विवेदी युगीन काव्य, छायावादी काव्य ,हालावादी काव्य , प्रगतिवादी काव्य , राष्ट्रीय काव्य , प्रयोगवादी काव्य ,नई कविता ,समकालीन कविता, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता के आंदोलन, हिंदी ग़ज़ल,हाइकु, गीत, नवगीत ।

इकाई - II आधुनिक गद्य साहित्य :

- उपन्यास साहित्य , कहानी साहित्य , नाटक साहित्य, गीतिनाटय , एकांकी साहित्य का संक्षिप्त परिचय ।

इकाई -III कथेतर गद्य साहित्य :

- निबंध ,संस्मरण, आत्मकथा ,जीवनी, रेखाचित्र,रिपोर्ताज,यात्रा वर्णन, डायरी , व्यंग्य, प्रवासी साहित्य,साक्षात्कार, आलोचना साहित्य का संक्षिप्त विकासात्मक परिचय |

इकाई IV विमर्शमूलक साहित्य :

- स्त्री विमर्श,दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श,अल्पसंख्यक विमर्श, किन्नर विमर्श ,दिव्यांग विमर्श, किसान विमर्श ,वृद्ध विमर्श पर्यावरण विमर्श, आदि का संक्षिप्त विकासात्मक परिचय ।

- **सहायक ग्रंथ सूची : -**

१. हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र
२. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आ. रामचंद्र शुक्ल
३.आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
४. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आलोक कुमार शुक्ल
५. हिन्दी साहित्य का अतीत- आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
६. आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास - नंदकिशोर नवल
७.साहित्य और इतिहास दृष्टि- मैनेजर पाण्डेय
८.आज का हिन्दी उपन्यास- डॉ. इन्द्रनाथ मदान
९. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
१०.समकालीन हिदी कहानी- डॉ. विनय
११.इक्कीसवीं सदीं का हिन्दी साहित्य : समय, समाज और संवेदना - रवीन्द्रनाथ मिश्र
१२. हिन्दी के प्रातिनिधिक निबंधकार- डॉ. हरिमोहन
१३ हिन्दी साहित्य की युग और प्रवृत्तियाँ- डॉ. शिवकुमार
१४. आधुनिक हिन्दी निबंध- डॉ. बापूराव देसाई
१५.हिन्दी नाटक- डॉ. बच्चन सिंह
१६.स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बापूराव देसाई
१७.बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य-सं.डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
१८.अरुण कमल की कविता जनवादी पक्ष- डॉ. संजय रणखांबे
१९.हिंदी साहित्य का इतिहास -डॉ.माधव सोनटक्के

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-**

१. आधुनिक काल के प्रमुख काव्य प्रकारों की प्रवृत्तियों के विश्लेषण की नई दृष्टि छात्रों में निर्माण हुई।
२. आधुनिक काल के कथा साहित्य तथा कथेतर साहित्य का विकासात्मक परिचय छात्रों को हुआ ।
३. विमर्शमूलक साहित्य तथा प्रवासी साहित्य का अध्ययन छात्रों ने किया ।

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

द्वितीय *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN- 202 आधुनिक काव्य - महाकाव्य और खण्डकाव्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ छात्रों को आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियों से परिचित कराना।
- ✓ आधुनिक काव्य के महाकाव्य और खण्डकाव्य की विशेषताओं और मानदण्डों से छात्र को अवगत कराना।
- ✓ महाकाव्य और खण्डकाव्य का तात्विक विवेचन करना।
- ✓ प्रातिनिधिक कृतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति छात्रों के मन में आस्था एवं आदर्श उत्पन्न करना।

इकाई – I महाकाव्य : सैध्दांतिकी

- **हिन्दी महाकाव्य :अर्थ परिभाषा,और स्वरूप**
- **हिन्दी महाकाव्य परंपरा : विकासात्मक स्वरूप**
- **हिन्दी महाकाव्य के प्रमुख तत्व**
- **हिन्दी के प्रमुख महाकाव्यों का समान्य परिचय**

इकाई –II आधुनिक हिन्दी महाकाव्य : प्रातिनिधिक साहित्यकृति :-

कामायनी –जयशंकर प्रसाद

विक्रम प्रकाशन ई-5/13 कृष्ण नगर नई दिल्ली

- ❖ अध्ययनार्थ सर्ग : चिंता और लज्जा सर्ग
- ❖ अध्ययनार्थ विषय -:
  - **कामायनी की संक्षिप्त कथावस्तु**
  - **कामायनी का कला पक्ष**
  - **कामायनी की प्रासंगिकता**
  - **कामायनी में वर्णित समरसता दर्शन**
  - **कामायनी में वर्णित पात्र की प्रतीकात्मकता**
  - **कामायनी में प्रस्तुत जल प्लावन प्रसंग**
  - **कामायनी में वर्णित नारी विषयक कवि का दृष्टिकोण**
  - **कामायनी महाकाव्य का उद्देश्य**

इकाई – III खण्डकाव्य : सैध्दांतिकी

- हिन्दी खण्डकाव्य : अर्थ ,परिभाषा और स्वरूप
- हिन्दी खण्डाकाव्य परंपरा : विकासात्मक स्वरूप
- हि न्दी खण्डकाव्य के प्रमुख तत्व
- हिन्दी के प्रमुख खण्डकाव्यों का सामान्य परिचय

इकाई- IV आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य : प्रातिनिधिक साहित्यकृति

भारत भारती – श्रीमैथिलीशरण गुप्त

प्रकाशक साहित्य सदन ,चिरगाँव (झाँसी)
प्रथम संस्कारण : 1984

❖ **अध्ययनार्थ विषय -:**

- **भारत–भारती की संक्षिप्त कथावस्तु**
- **भारत भारती का कला पक्ष एवं काव्यसौष्ठव**
- **भारत भारती की प्रासंगिकता**
- **भारत भारती में वर्णित समाज व्यवस्था**
- **भारत भारती में वर्णित आर्थिक विचार**
- **भारत भारती में वर्णित स्त्री विषयक विचार**
- **भारत भारती में वर्णित पर्यावरण तथा कृषि विषयक विचार**
- **भारत भारती में वर्णित साहित्य विषयक विचार**
- **भारत भारती में वर्णित गौरवशाली इतिहास**

❖ संदर्भ ग्रंथ सूची

१ **कामायनी एक पुनर्विचार – मुक्तिबोध**

२ **कामायनी के पात्र –मेहता**

३ **प्रसाद की काव्य प्रतिमा –नागर विमल शंकर**

४ **कामायनी विवेचनात्मक अध्ययन –सरोज भारत भूषण**

५ **प्रसाद साहित्य में उदात्त तत्व – व्दिवेदी विद्यावती**

६ **मैथिलीशरण गुप्त संचयिता – नंदकिशोर नवल**

- **पाठयक्रम की उपादेयता :**
  - **छात्रों को आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियों से परिचित किया गया।**
  - **आधुनिक काव्य के महाकाव्य और खण्डकाव्य की विशेषताओं और मानदण्डों से छात्र को अवगत किया गया ।**
  - **महाकाव्य और खण्डकाव्य का तात्विक विवेचन कर उसके आधार पर साहित्य कृतियों का अध्यापन किया गया।**
  - **प्रातिनिधिक कृतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति छात्रों के मन में आस्था एवं आदर्श उत्पन्न कर उनके मन राष्ट्र के प्रति गौरव और अस्मिता का भाव निर्माण कि या गया ।**

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

द्वितीय *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-203 पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा आलोचना

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ पाश्चात्य काव्यशास्त्र का विकासात्मक परिचय समझाना |
- ✓ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों का परिचय देना |
- ✓ पाश्चात्य काव्य समीक्षा के आधुनातन आयामों को स्पष्ट करना |
- ✓ पाश्चात्य काव्य समीक्षकों का सामान्य परिचय करना |

इकाई - I

- प्लेटो काव्य संबंधी मान्यताएँ ।
- अरस्तू - अनुकृति एवं विरेचन ।
- लोंजाइनस - काव्य में उदात्त की अवधारणा ।
- वड्र्सवर्थ - काव्य भाषा का सिध्दांत ।

इकाई - II

- कॉलरिज - कल्पना और फैन्टेसी ।
- क्रोचे - अभिव्यंजनावाद ।
- टी.एस. इलियट - परम्परा और वैयक्तिक प्रतिभा, निर्वेयक्तिकता का सिद्धांत ।
- आई.ए.रिचडर्स- मूल्य सिध्दांत,सम्प्रेषण सिध्दांत ।

इकाई - III

- नई समीक्षा
- मार्क्सवादी समीक्षा
- शास्त्रीयतावाद,स्वच्छंदतावाद,यथार्थवाद,संरचना उत्तर संरचनावाद।
- आधुनिकता,उत्तर आधुनिकता एवं औपनिवेशिकता।

इकाई - IV

- आदर्शवाद,यथार्थवाद,प्रकृतवाद
- प्रतीक और प्रतीकवाद
- बिम्ब और बिम्बवाद
- प्रभाववाद और अस्तित्ववाद

- **सहायक ग्रंथों सूची :**

१. संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, एवं प्राच्य काव्यशास्त्र- गोपीचंद नारंग

२. अरस्तू का काव्यशास्त्र- डॉ. नगेंन्द्र

३. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- देवेंद्रनाथ शर्मा

४. भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र- डॉ. सत्यदेव चौधरी /शांतिस्वरूप गुप्त

५. समीक्षा के भारतीय एवं पाश्चात्य मानदण्ड- डॉ. रामसागर त्रिपाठी

६. भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र- डॉ. गोविन्द कुमार टी. बेकरीया.

७. पाश्चात्य साहित्य चिंतन- निर्मला जैन

८. रिचर्डस् के आलोचना सिद्धांत- डॉ. शंभूनाथ झा

१०. पाश्चात्य काव्यशास्त्र- डॉ. तारकनाथ बाली

११. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्ययशास्त्र - डॉ.रामकुमार वर्मा

१२. पाश्चत्य काव्यशास्त्र- डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त

१३. पाश्चत्य काव्यशास्त्र इतिहास सिद्धांत और वाद- डॉ. भगीरथ मिश्र |

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-**

१. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का विकासात्मक परिचय छात्रों को समझा |

२. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों से छात्र परिचित हुए |

३. पाश्चात्य काव्य समीक्षा के आधुनातन आयामों को छात्रों ने जाना |

४. पाश्चात्य काव्य समीक्षकों का सामान्य परिचय छात्रों को हुआ |

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

द्वितीय *सत्र पाठ्यक्रम*

वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course : Skill Based)

HIN - 204 (A) पटकथा लेखन

उद्देश्य

- रोज़गार की दृष्टि से पटकथा लेखन का अध्ययन
- पटकथा लेखन के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों का ज्ञान
- सर्जनात्मक क्षमता का विकास

इकाई ।

पटकथा परिचय, परिभाषा, स्वरूप और अवधारणा आदि।

इकाई ॥

पटकथा लेखन के सिद्धांत - संरचनात्मक सिद्धांत, सिड फील्ड का सिद्धांत, अनुक्रम दृष्टिकोण, चरित्र सिद्धांत, तक़नीक, लेखन के विभिन्न चरण-कथा विचार, संक्षिप्त कथा, विकसित कथा , दृश्य रूपरेखा , व्यावहारिक रूपरेखा , पूर्ण संवाद , शूटिंग स्क्रिप्ट आदि।

इकाई ॥।

पटकथा लेखन चयन के क्षेत्र, समस्याएँ, आवश्यक मापदण्ड और विभिन्न लेखन प्रकार - सिनेमा, टेलीविज़न, रेडियो लेखन पटकथा लेखन की आवश्यकता, लेखक के लिए आवश्यक गुण, महत्व और संभावनाएँ आदि।

इकाई ।V प्रातिनिधिक रचना : हायवे 39 - उदय प्रकाश ,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

सहायक ग्रंथ सूची :

१] पटकथा लेखन : एक परिचय - मनोहर श्याम जोशी - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली

२] कथा पटकथा - मन्नू भंडारी - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

३] व्यावहारिक निर्देशिका : पटकथा लेखन - असग़र वजाहत - राजकमल प्रकाशन

४] पटकथा तथा संवाद लेखन - विपुल कुमार - श्री नटराज प्रकाशन

५] फ़िल्म की कहानी कैसे लिखें - विपुल के. रावल - राजकमल प्रकाशन

६] पटकथा लेखन ; तक़नीक एवं विधियाँ - सुदर्शन कुमार 'चेतन' - श्री नटराज प्रकाशन

७] फिल्म स्क्रिप्ट राइटिंग - लवकुश सिंह 'लोकमान्य' - नोशन प्रेस

८] आइडिया से परदे तक - रामकुमार सिंह / सत्यांशु सिंह - राजकमल प्रकाशन

९] लेखक कैसे बनें - रस्किन बॉण्ड (अनुवाद-रेणु तलवार) - अनबाउण्ड स्क्रिप्ट

१०] फिल्मों में कथा-पटकथा लेखन -रतन प्रकाश – प्रभात प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली
११] पटकथा कैसे लिखें - राजेन्द पांडे - वाणी प्रकाशन
१२] पटकथा सौंदर्य और सृजन - डॉ. चंद्रदेव यादव, डॉ. मनोज कुमार - अनंग प्रकाशन, नई दिल्ली
१३] पटकथा लेखन - अवनींद्र झा - पुस्तक महल, नई दिल्ली

उपादेयता :

- रोज़गार की दृष्टि से पटकथा लेखन का अध्ययन किया ।
- पटकथा लेखन के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों का ज्ञान प्राप्त किया ।
- सर्जनात्मक क्षमता का विकास हुआ ।
- पटकथा कैसे लिखें इसका ज्ञान छात्रों को प्राप्त हुआ ।

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

द्वितीय सत्र पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course / Skill Based)

HIN - 204 B – प्रवासी साहित्य

उद्देश्य-

1] भारत के बाहर हिंदी में लिखे जा रहे साहित्य को समझाने का प्रयास।

2] हिंदी भाषा के वैश्विक पटल पर हो रहे विस्तार एवं चर्चा को समझने की एक दृष्टि विकसित करना ।

3] हिंदी भाषा के महाशक्ति के रूप में बढ़ते कदम से परिचय कराना ।

4] विद्यार्थियों में प्रवासी साहित्य की विविध साहित्यिक अभिव्यक्तियों की समझ विकसित करना।

इकाई - I

प्रवासी साहित्य- अवधारणा, स्वरुप,विशेषताएँ, परंपरा एवं **प्रमुख रचनाकारों का परिचय -** अभिमन्यु अनत, तेजेंद्र शर्मा, महेन्द्र भल्ला, मोहनराणा**,** अनिल जन विजय**,** सुषम बेदी**,** सुधा ओम ढींगरा,पूर्णिमा वर्मन,*अंजना संधीर,* उषाराजे सक्सेना**,** अचला शर्मा**,** देवी नांगरानी।

इकाई- II प्रतिनिधि कविताएँ :-

1. **चाहती हैं लौटना'-** अंजना संधीर
2. **'प्रार्थना'-** अनिल जनविजय
3. **'मेरे गाँव में' -**पूर्णिमा वर्मन
4. **'ऐ इस देश के बनने वाले भविष्य'-** तेजेंद्र शर्मा
5. **'देस की छाँव'-** सुधा ओम ढींगरा
6. **'ख़ुशबू वतन की'-** देवी नांगरानी**,**
7. **'वह अनजान अप्रवासी'-** अभिमन्यु अनत
8. **'अस्तव्यस्त में' -** मोहन राणा

इकाई- III प्रतिनिधि कहानी संग्रह :-

कौनसी ज़मीन अपनी – सुधा ओम ढींगरा **भावना प्रकाशन, 2010**

इकाई- IV प्रतिनिधि उपन्यास :-

लाल पसीना - अभिमन्यु अनत राजकमल प्रकाशन, 2010

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- वर्तमान साहित्य', कुंवरपालसिंह, नमिता सिंह (संपादक), जनवरी-फरवरी-2006
- कमल 2- कमल किशोर गोयनका, विश्व हिंदी रचना, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली-2003
- प्रवासी साहित्य : जोहान्स बर्ग से आगे, प्रधान संपादक, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रकाशक-विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली, संस्करण-2015
- अप्रवासी, मंजु कपूर , रैण्ड महाउस इंडिया , नोएडा , 2009
- उड़ने से पेशतर -महेन्द्र भल्ला , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , 2010
- गाथा अमर बेल की -सुषम बेदी , नेशनल पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली , 2015
- दिशाएँ बदल गई - नरेश भारतीय , राजपाल एंड संस , दिल्ली , 2014
- पथरीला सोना - रामदेव धुरंधर , हिंदी बुक सेण्टर , नई दिल्ली , 2012
- पूछो इस माटी से - रामदेव धुरन्धर , नेशनल पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली , 2012
- लौटना - सुषम बेदी , पराग प्रकाशन , दिल्ली , 2011
- हवन - सुषम बेदी , पराग प्रकाशन , दिल्ली , 2010
- देशांतर – प्रवासी भारतीयों की कहानियाँ - संपादक – तेजेंदर शर्मा – हिंदी अकादमी प्रकाशन
- प्रवासी हिंदी साहित्य- विविध आयाम , डॉ. रमा , साहित्य संचय 2017
- **कौनसी जमीन अपनी** – सुधा ओम ढींगरा- **भा**वना प्रकाशन, 2010 -[कहानी संग्रह]
- **रामजी भला करें**- अनिल जन विजय, प्रकाशक- मेधा बुक्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२, भारत, वर्ष- २००४ **-कविता संग्रह**
- **मेरा दावा है** – सुधा ओम ढींगरा - विभौम प्रकाशन, 2008-**कविता संग्रह**
- **'लाल पसीना'**-अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, 2010

पाठ्यक्रम की उपादेयता :

1. भारत के बाहर हिंदी में लिखे जा रहे साहित्य को आत्मसात किया गया ।
2. हिंदी भाषा के वैश्विक पटल पर हो रहे विस्तार एवं चर्चा को समझने की एक दृष्टि भी विकसित हो गई ।
3. वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा के महाशक्ति के रूप में बढ़ते कदम से परिचय हो पाए ।
4. प्रवासी साहित्य की विविध साहित्यिक अभिव्यक्तियों की विद्यार्थियों में समझ विकसित हुई

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी प्रथम वर्ष

दूवितीय *सत्र पाठ्यक्रम*

वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (/Elective Course : Skill Based)

HIN - 204 (C) महाराष्ट्र का लोक साहित्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ महाराष्ट्र के लोक साहित्य से छात्रों को परिचित करना |
- ✓ लोक साहित्य के महत्व को विशद करना |
- ✓ लोक साहित्य का सैध्दांतिक स्वरूप स्पष्ट करना |
- ✓ खान्देश,विदर्भ और मराठवाडा के लोक साहित्य का अध्ययन करना |

इकाई - I इकाई -I लोक साहित्य : संकल्पना और स्वरूप :

- लोक शब्द का अर्थ एवं परिभाषा और स्वरूप
- लोक साहित्य की परंपरा
- लोक साहित्य का वर्गीकरण
- लोक साहित्य की विशेषताएँ
- लोक साहित्य के विविध प्रकार : लोकगीत,लोककथा,लोक नाटय,लोकोक्तियाँ आदि

इकाई -II खान्देश का लोक साहित्य :

- लोक गीत : .
  - कानाबाई आयी रे,आयी रे,
  - विवाह गीत : बनी के घर मंडप ताना
  - आदिवासी विवाह गीत : बनी को पहनाओ हरी चुडिया
  - कथा गीत : पार्वती की लोकगाथा
  - बाल गीत : तबडक - तबडक घोडा
  - श्रमगीत : बोनी की शुरूआत
  - सप्तश्रृंगी देवी की गाथा
  - ओवी गीत : (ओवी जँतसर)
  - चक्की पर के ओवी गीत
  - दलित समाज की ओवी
- लोककथा :
  - बोध कथाएँ : बुढ्रिया और चोर,उँट और लोमडी, गुरूजी और जीवन
  - मनोरंजक कथाएँ : तीन तीन कानवाला, यमराज और कहानीकार (तडवी भील्ली समाज) मुफत का भोजन (मावची बोली)
  - वृत्त कथा : बरगीत अमावस्या की कथा (लेवा बोली), नागपंचमी की कथा - सावन पंचमी

- चरित्रात्मक कथा : राजा हरियचंद्र (अहिरानी बोली)
- अन्य कथा : नादान आदिवासी (मावची बोली)

○ लोकनाटय :

- गोकुय को आया गुस्सा
- है तो मेरी दादी

○ लोकोक्तियाँ : आरंभिक बीस

इकाई -III विदर्भ का लोक साहित्य :

○ लोक गीत

- संस्कार गीत : भोर ही में आँगन
- विदाई गीत : बेटी चली है ससुराल
- शिव पार्वती विवाह गीत : मैय्या तू तुलजा देवी
- शबरी का गीत -भीलनी बडी महान
- भूलाबाई का गीत : करेले की बीज
- नाग पंचमी गीत : चल री सखी
- राम का गीत : पंढरपूर क्षेत्र के
- श्रम गीत : दिया आसरा ईश्वर ने
- चक्की गीत : जनी दलना पीसती
- बाल गीत : चंद मामा चांदनी

○ लोक कथा :

- बोध कथा : चतुर लोमडी, कुम्हार और गधा,दुकानदार और हाथी,
- बोध कथा : घोडा और नदी
- मनोरंजक कथा : सास बहु की लड़ाई

○ लोकनाटय : दंडार नाट्य

○ लोकोक्तियाँ : आरंभिक बीस

इकाई -IV मराठवाडा का लोक साहित्य :

○ लोकगीत :-

- श्रम गीत : सुरमई सांझभई
- झूला गीत : छत्रपती शिवाजी महाराज का पालन
- विवाह गीत : नाग बेल के पत्तों से
- सुहागन गीत : गोंदी गाँव के पेठ में
- चरवाहे गीत : चरवाहे चरवाहे गोशाला खोल
- यात्रा गीत : सखी री पंढरी पंढरी
- बाल गीत : अरिंग-मिरिंग लवंग तिरिंग
- कथागीत : सीता चली बन में

- **ओवी गीत : पहली मेरी ओवी**
- **बरखा गीत : पानी बरसता**

○ **लोक कथा :-**

- **वाघारी वनवासी की लोक कथा**
- **अनवारी बनवारी भाईयों की लोककथा**
- **गंगा माई की मन्नत**

○ **लोकनाट्य :**

- **कैसी धूम मची गजत में (पोवाडा)**

○ **लोकोक्तियाँ : आरंभिक बीस**

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. लोक साहित्य शास्त्र (अहिराणी के परिप्रेक्ष्य में)-डॉ. बापूराव देसाई
२. मावची लोकसाहित्य शास्त्र - डॉ. बापूराव देसाई
३. पच्चीस लोक बोलियों का शास्त्र और संस्कृति- डॉ. बापूराव देसाई
४.लोक साहित्य के प्रतिमान- डॉ.कुंदनलाल उप्रेति
५. लोक साहित्य के मूल स्त्रोत - डॉ. उर्मिला पाटील
६. लोक साहित्य का अध्ययन- डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
७. महाराष्ट्र का हिन्दी लोक काव्य -डॉ.कृष्ण दिवाकर
८.लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन - डॉ.कुलदीप
९. हिन्दी लोक साहित्य शास्त्र, सिद्धांत और विकास - डॉ.अनुसया अग्रवाल
१०. लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - डॉ.विद्या चौहान
११.लोककथा परिचय - नलिन विलोचन शर्मा
१२. लोककथा विज्ञान- श्रीचन्द्र जैन
१३. लोक साहित्य शास्त्र -डॉ.नंदलाल कल्ला
१४.भारतीय लोक साहित्य की रूपरेखा -दुर्गा भागवत अनु.स्वर्णकांता
१५. भारतीय लोक साहित्य - डॉ.श्याम परमार
१६. लोक साहित्य की भूमिका - डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय
१७. लोक साहित्य सिध्दांत और प्रयोग- डॉ. श्रीराम शर्मा
१८. **लोक साहित्य विविध आयाम एवं दृष्टि – डॉ. जयश्री गावित**
१९. महाराष्ट्र का लोक साहित्य कोश - संपादक डॉ.महेन्द्र ठाकुरदास/ डॉ.सुनील

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**

- **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-**

१. छात्रों ने लोक साहित्य के स्वरूप और संकल्पना को भलीभाँति जाना और समझा।
२.लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा और प्रकीर्ण साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष से छात्र परिचित हुए।
३.छात्रों ने लोकोक्तियाँ, मुहावरें, कहावतें आदि का भाषिक सौंदर्य जानकर उसके उपयोग कला को आत्मसात किया ।
४.छात्रों ने लोक साहित्य के महत्व को समझकर उसके उपादेयता को जाना ।

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

तृतीय *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-301 कथा साहित्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- कहानी विधा से छात्रों को परिचित कराना ।
- हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कहानीकारों की कहानियों से अवगत कराना ।
- हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करना ।
- हिंदी कहानियों के माध्यम से छात्रों में सामाजिक संवेदनशीलता, राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक समरसता आदि मूल्यों को संवर्धित करना ।

इकाई - I कहानी विधा :

- परिभाषा ,स्वरूप और मानदण्ड
- हिंदी कहानी विधा के उद्भव एवं विकास का सामान्य परिचय
- हिंदी के प्रमुख कहानीकार तथा उनका सामान्य परिचय
- हिंदी कहानी और प्रमुख कहानी आंदोलन सामान्य परिचय ।

इकाई - II कहानी विधा - प्रतिनिधिक रचना

हिंदी की कालजयी कहानियाँ संपादक - डॉ. सुनील कुलकर्णी/मनिषा महाजन
राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली

- दुलाईवाली - राजेन्द्रबाला घोष (बंग महिला)
- राही - सुभद्राकुमारी चौहान
- ईदगाह -प्रेमचंद
- उसने कहा था - चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
- गूँगे- रांगेय राघव
- सफदर – राहुल सांस्कृत्यायन
- चीफ की दावत - भीष्म साहनी
- तीसरी कसम -फणीश्वरनाथ रेणु
- सिक्का बदल गया - कृष्णा सोबती
- परिंदे - निर्मल वर्मा

इकाई - III उपन्यास विधा :

- परिभाषा ,स्वरूप और मानदण्ड ,
- उपन्यास विधा के उद्भव एवं विकास का सामान्य परिचय,

- हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार तथा उनका सामान्य परिचय,
- हिंदी उपन्यासों की विविध धाराओं का सामान्य परिचय : सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, प्रगतिवादी,समाजवादी अथवा राजनीतिक, ऐतिहासिक और आँचलिक आदि ।

इकाई - IV उपन्यास विधा -

प्रातिनिधिक उपन्यास :- धरती धन न अपना – जगदीश चन्द्र
तृतीय संस्करण 2020 आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली

- **सहायक ग्रंथ सूची :-**

१. उपन्यास तत्व एवं रूप विधान -श्री.नारायण अग्निहोत्री
२. हिंदी उपन्यास शिल्प और प्रयोग-डॉ.त्रिभुवन सिंह
३. आधुनिक उपन्यासों में वस्तुविन्यास- डॉ.सरोजिनी त्रिपाठी
४. आज का हिंदी उपन्यास -डॉ.इंद्रनाथ मदान
५. हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र
६. हिंदी उपन्यास : उद्‌भव और विकास- डॉ.सुरेश सिन्हा
७. आधुनिक उपन्यास विविध आयाम-डॉ.विवेकी राय
८. प्रेमचंदोत्तर उपन्यसों की शिल्प विधि-डॉ.सत्यपाल चुघ
९. हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास -डॉ.धनराज मानधने
१०. समकालीन हिंदी उपन्यास कथ्य विश्लेषण-डॉ.प्रेमकुमार
११. हिंदी कथा साहित्य का पुनर्पाठ- डॉ.करूणाशंकर उपाध्याय
१२. नई कहानी का स्वरूप विवेचन-डॉ.इंदु रश्मि
१३. निर्मल वर्मा के कहानियों में व्यक्त चिंतन – डॉ.राजेन्द्र जाधव
१४. अमरकांत का कथा साहित्य कथ्य एवं शिल्प – डॉ.योगेश गोकुळ पाटील

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-
    - कहानी विधा से छात्रों को परिचित हुए।
    - हिंदी साहित्य की श्रेष्ठ कहानीकारों की कहानियों से अवगत हुए ।
    - हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास हुआ।
    - हिंदी कहानियों के माध्यम से छात्रों में सामाजिक संवेदनशीलता, राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक समरसता आदि मूल्यों के संदर्भ में जागृती
      निर्माण हुई ।

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

तृतीय *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-302 अनुसंधान प्रविधि एवं प्रक्रिया

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया का अध्ययन करना |
- ✓ अनुसंधान के विविध प्रकारों पर प्रकाश डालना |
- ✓ अनुसंधान के सोपानों का क्रमश: विवेचन करना |

इकाई -I अनुसंधान अर्थ और स्वरूप :

अनुसंधान की परिभाषा, अर्थ और स्वरूप, मानव जीवन में अनुसंधान का स्थान, आरंभिक और वर्तमानकालीन अनुसंधान की उपादेयता ।

इकाई -II अनुसंधान के प्रकार :

विषयानुसार अनुसंधान के प्रकार, कार्य प्रणाली के अनुसार अनुसंधान के भेद, वस्तु तथ्यात्मक अनुसंधान, भावानुसंधान, भाषानुसंधान, पाठानुसंधान, ऐतिहासिक अनुसंधान तुलनात्मक अनुसंधान की उपयोगिता ।

इकाई -III अनुसंधान के सोपान :

विषय चयन,सामग्री संकलन, रूपरेखा निर्माण,शोध प्रबंध का लेखन,संदर्भ लेखन की अत्याधुनिक प्रणालियाँ,संदर्भ ग्रंथ सूची का लेखन तथा अंतिम प्रारूप एवं टंकन |

इकाई -IV पाठालोचन के मुख्य सिध्दांत, अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया, समकालीन साहित्य अनुसंधान में ऐतिहासिक तथ्यों और पध्दतियों का प्रयोग, साहित्यिक अनुसंधान में समाजशास्त्रीय पध्दतियों का प्रयोग,अनुसंधान में संगणक तथा इंटरनेट का महत्व |

- **सहायक संदर्भ सूची :**

१. शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि- बैजनाथ सिंहल

२. शोध के नए आयाम- डॉ. बी. के. कलासवा

३. अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया- एस-एन.गणेशन्

४. अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया- डॉ. राजेन्द्र मिश्र

५. शोध प्रविधि और प्रक्रिया- डॉ. हरीश अरोड़ा

६. शोध प्रक्रिया- डॉ. सरनाम सिंह शर्मा

७. अनुसंधान विधि - डॉ. गोविन्दकुमार टी. वेकरीया

८. शोध प्रविधि - डॉ. विनयमोहन शर्मा

९.अनुसंधान सर्जन एवं प्रक्रिया- डॉ. अर्जुन तडवी

१०. हिन्दी अनुसंधान: वैज्ञानिक पद्धतियाँ- डॉ. कैलाशनाथ मिश्र

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :**

१.अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया का अध्ययन किया |

२.अनुसंधान के विविध प्रकारों को अवगत किया |

३. अनुसंधान के सोपानों को क्रमश: समझ लिया |

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

तृतीय *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-303 हिंदी भाषा और उसका विकास

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ हिंदी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से छात्रों को अवगत कराना |
- ✓ हिंदी की उपभाषाएँ तथा बोलियों का सामान्य परिचय देकर छात्रों को उससे अवगत कराना |
- ✓ हिंदी शब्द रचना और रूप रचना संबंधी छात्रों को सूचित कराना |
- ✓ हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूपों से छात्रों को परिचित कराना |

इकाई -I हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

- प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ ।
- मध्यकालीन आर्य भाषाएँ :- पाली,पाकृत-शौरसेनी,अर्धमागधी,मागधी,अपभ्रंश आदि
- प्राचीन एवं मध्यकालीन आर्य भाषाओं की विशेषताएँ |
- आधुनिक भारतीय आर्य भाघाएँ।

इकाई -II हिंदी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ : -

- पश्चिमी हिंदी
- पूर्वी हिंदी
- राजस्थानी हिंदी
- बिहारी हिंदी
- पहाड़ी हिंदी |

इकाई - III हिंदी शब्द रचना और रूप रचना :-

- हिंदी शब्द रचना :- उपसर्ग,प्रत्यय,समास ।
- रूप रचना :- लिंग, वचन कारक,संज्ञा, सर्वनाम,विशेषण एवं क्रियारूप |
- हिंदी वाक्य रचना

इकाई -IV हिंदी भाषा प्रयोग के विविध रूप :-

- हिंदी के विविध रूप : हिंदी,उर्दू,दक्खिनी और हिन्दुस्तानी आदि ।
- बोली, मानक भाषा,राजभाषा,राष्ट्रभाषा ,विश्वभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ।

- देवनागरी लिपि : मानकीकरण ,विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास ।

सहायक ग्रंथ सूची :

१. भाषा विज्ञान- डॉ. भोलानाथ तिवारी
२. हिन्दी भाषा- डॉ. भोलानाथ तिवारी
३ भाषा विज्ञान -डॉ. तेजपाल चौधरी
४.भाषा विज्ञान- डॉ. रामस्वरूप खरे
५.भाषिक हिन्दी भाषा तथा भाषा शिक्षण- डॉ. अंबादास देशमुख
६.भाषा विज्ञान- डॉ. डी. एम. दोमडिया
७. भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा का इतिहास -डॉ.हणमंतराव पाटील/ सुधाकर शेंडगे
८. भाषा विज्ञान के अधुनातन आयाम एवं हिन्दी भाषा- डॉ. अंबादास देशमुख
९. भाषा विज्ञान एक अध्ययन- गरिमा श्रीवास्तव
१०.भाषा विज्ञान : हिन्दी भाषा- डॉ. सुरेश सिंहल
११. भाषा विज्ञान का रसायन- कैलाशनाथ पाण्डेय
१२.भाषा विज्ञान: हिन्दी भाषा और लिपि-रामकिशोर शर्मा
१३. भाषा चिन्तन के नये आयाम -रामकिशोर शर्मा
१४.आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्त- -रामकिशोर शर्मा
१५. हिंदी भाषा का उद्‌गम और विकास - उदयनारायण तिवारी
१६. हिंदी भाषा का उद्‌भव और विकास - हेतु भारव्दाज
१७. हिंदी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास - सत्यनारायण त्रिपाठी
१८. हिंदी भाषा की संरचना - डॉ. भोलानाथ तिवारी
१९. हिंदी भाषा चिंतन - दिलीप सिंह
२० भाषा का संसार - दिलीप सिंह

- पाठ्यक्रम की उपादेयता :
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-
    १. हिंदी भाषा के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से छात्र अवगत हुए |
    २. हिंदी की उपभाषाएँ तथा बोलियों का सामान्य परिचय प्राप्त कर छात्र उससे अवगत हुए ।
    ३. हिंदी शब्द रचना और रूप रचना संबंधी छात्रों को ज्ञान प्राप्त हुआ |
    ४. हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूपों को छात्रों ने आत्मसात किया ।

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

तृतीय *सत्र पाठ्यक्रम*

वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course: Skill Based)

HIN - 304 (A) भाषिक संप्रेषण

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ संप्रेषण की कला का महत्व प्रतिपादित करना |
- ✓ संप्रेषण में भाषा के महत्व को विशद करना |
- ✓ संप्रेषण के मौखिक और लिखित प्रकारों को समझाना |

इकाई -I हिन्दी का भाषिक स्वरूप :-

- हिंदी भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप ।
- हिन्दी भाषा के विविध रूप ।
- भाषा और भाषिक संरचना के विविध स्तर।
- भाषा के प्रकार्य ।
- भाषा का सामाजिक संदर्भ ।
- भाषा की विशेषताएँ ।

इकाई -II संप्रेषण :सैध्दांतिक स्वरूप

- संप्रेषण का अर्थ और परिभाषा ।
- संपेषण का प्रयोजन ।
- संप्रेषण की प्रक्रिया ।
- संप्रेषण के प्रकार ।
- संप्रेषण के बाधक तत्व ।
- संप्रेषण की चुनौतियाँ ।

इकाई -III भाषा और मौखिक संप्रेषण :

- मौखिक संप्रेषण का स्वरूप
- मौखिक संप्रेषण हेतु आवश्यक गुण
- मौखिक संप्रेषण के लाभ ।
- मौखिक संप्रेषण के दोष ।
- मौखिक संप्रेषण के विविध प्रकार :- - बातचीत, संवाद, बैठकें, सम्मेलन, सभाएँ, साक्षात्कार, व्याख्यान, उद्घोषणा, रेडियो वार्ताएँ , टेलीफोन या भ्रमणध्वनि पर बातचीत,कहानी कथन,पौराणिक आख्यानों का प्रस्तुतीकरण, वाद-विवाद या वक्तृत्व, प्रतियोगिताएँ, अदालती मुकदमें और संसदीय बहस आदि का परिचय |

इकाई -IV भाषा और लिखित संप्रेषण :

- लिखित संप्रेषण का स्वरूप
- लिखित संप्रेषण हेतु आवश्यक गुण

- लिखित संप्रेषण के लाभ
- लिखित संप्रेषण के दोष
- लिखित संप्रेषण के विविध प्रकार :
  पत्र लेखन, रिपोर्ट लेखन, नोट या टिप्पण लेखन, विज्ञापन लेखन, ई-मेल, ब्लॉग,ट्वीटर, फेसबुक लेखन और इंस्टाग्राम लेखन आदि ।

- **सहायक संदर्भ सूची :**

१. हिन्दी भाषा - डॉ. भोलानाथ तिवारी
२. भाषिकी हिन्दी भाषा तथा भाषा शिक्षण -डॉ.अम्बादास देशमुख
३. प्रयोजनमूलक हिन्दी और पत्रकारिता - डॉ.दिनेश प्रसाद सिंह
४. व्यवसायिक संप्रेषण -डॉ.अनूपचन्द्र पु.भायाणी
५. हिन्दी भाषा -डॉ.हरदेव बहारी
६. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ.भोलानाथ तिवारी
७. मानक हिन्दी का शुध्दिपरक व्याकरण - रमेश मेहरोत्रा
८. व्यवहारिक हिन्दी पत्राचार -दंगल झाल्टे
९. मानक हिन्दी स्वरूप और संरचना - डॉ. रामप्रकाश
१०. परिष्कृत हिन्दी व्याकरण - बद्रीनाथ कपुर
११. प्रयोजनमूलक हिन्दी तथा मीडिया लेखन - डॉ.बापूराव देसाई
१२.सृजनात्मक लेखन-हरिश आरोडा
१३. संप्रेषण कला - अरूण चतुर्वेदी
१४. संप्रेषण परक व्याकरण : सिध्दांत और प्रारूप - सं. सुरेश कुमार ,केन्द्रीस हिंदी संस्थान,आगरा
१५. मौखिक कौशल (खंड - एक) संपादन केन्द्रीय हिंदी संस्थान,आगरा
१६.मौखिक कौशल (खंड - दो) संपादन केन्द्रीय हिंदी संस्थान,आगरा
१७ भाषिक संप्रेषण - डॉ. सुनील कुलकर्णी अथर्व पब्लिकेशन ,जलगाँव

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नांकिंत लाभ हुए :-

    १. संप्रेषण की कला का महत्व छात्रों ने जाना |
    २. संप्रेषण में भाषा के महत्व को समझकर उसका व्यवहारिक उपयोग करने की कला को छात्रों ने अवगत किया है |
    ३. संप्रेषण के मौखिक और लिखित प्रकारों को छात्रों ने आत्मसात किया |

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

तृतीय *सत्र पाठ्यक्रम*

वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course: Skill Based)

HIN - 304 (B) नाटक एवं एकांकी

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- छात्रों को हिंदी नाटक विधा से परिचित कराना ।
- छात्रों को एकांकी विधा से परिचित कराना ।
- नाटक तथा एकांकी विधा की प्रसिध्द् रचनाओं के माध्यम से छात्रों में विविध मानवी मूल्य विकसित करना ।
- नाटक और रंगमंच के संदर्भ में छात्रों को उजागर कराना ।

इकाई - I नाटक साहित्य :

- नाटक साहित्य का सामान्य परिचय ।
- हिंदी नाटक और रंगमंच, विकास के चरण ।
- भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग, साठोत्तर युग और नया नाटक आदि ।
- हिंदी की प्रमुख नाटयकृतियों तथा नाटककारों का संक्षेप में परिचय ।

इकाई - II नाटक साहित्य प्रतिनिधि पाठ्यपुस्तक :-

- कोणार्क - जगदीशचन्द्र माथुर ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

इकाई - III एकांकी साहित्य :

- एकांकी साहित्य का सामान्य परिचय ।
- हिंदी एकांकी और रंगमंच
- हिंदी के प्रमुख एकांकीकार और उनकी एकांकियों का सामान्य परिचय ।

इकाई - IV एकांकी साहित्य प्रतिनिधि पाठ्यपुस्तक :-

- प्रतिनिधि महिला एकांकी - डॉ. माधव सोनटक्के
  लोकभारती प्रकाशन,प्रयागराज (इलाहाबाद)

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. हिन्दी नाटक (विमर्श के विविध आयाम) ममता धवन, स्वराज प्रकाशन ,नई दिल्ली
२. हिन्दी रंगकर्म दशा और दिशा - डॉ. जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन,नई दिल्ली
३. हिन्दी नाटक आज और कल डॉ. जयदेव तनेजा,तक्षशिला प्रकाशन,नई दिल्ली
४. नये हिन्दी लघु नाटक -नेमीचंद जैन
५. रंग अरंग- हृषीकेश सुलभ
६. हिन्दी नाटक -बच्चनसिंह
७. तुती की आवाज- हृषीकेश सुलभ
८.रंगमंच का जनतंत्र -हृषीकेश सुलभ
९. हिन्दी नाटक का उद्‌भव और विकास- डॉ. लक्ष्मीनारयण लाल
१०. हिन्दी नाटक और रंगमंच-पशुपति नाथ उपाध्याय
११. हिन्द काव्य नाटक और बोध- मृगेन्द्र राय
१२. आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच- नेमीचंद जैन
१३. समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच- जयदेव तनेजा
१४. मोहन राकेश और उनके नाटक- गिरिश रस्तोगी
१५. हिन्दी के एब्सर्ड नाटक - डॉ. नानासाहेब गोरे
१६. हिन्दी एकांकी उद्‌भव और विकास - डॉ.रामचरण महेन्द्र
१७. एकांकी और एकांकीकार -डॉ.रामचरण महेन्द्र
१८. हिन्दी एकांकी -सत्येन्द्र
१९. एकांकी और एकांकी - डॉ. सुरेन्द्र यादव
२०. मोहन राकेश और उनके नाटक- गिरीश रस्तोगी
२१. मोहन राकेश रंगशिल्प और प्रदर्शन- जयदेव तनेजा
२२. आधुनिक नाटक का अग्रदूत : मोहन राकेश- गोविन्द चातक
२२. हिन्दी नाटक के पाच दशक- कुसुम खेमानी
२३.हिन्दी एंकाकी -सिध्दनाथ कुमार
२४.रंगप्रक्रिया के विविध आयाम- सं.प्रेमसिंह सूक्ष्मा आर्य

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-
    १. छात्र हिंदी नाटक विधा से परिचित हुए।
    २. छात्र एकांकी विधा से परिचित हुए ।
    ३. नाटक तथा एकांकी विधा की प्रसिध्द् रचना के माध्यम से छात्रों ने विविध मानवी मूल्य आत्मसात किए ।
    ३. नाटक और रंगमंच के संदर्भ में छात्र जागृत हुए ।

--- ||| ---

तृतीय सत्र : ऑडिट पाठ्यक्रम

AC-303 (A) हिंदी साहित्य और हिंदी सिनेमा

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- **हिंदी साहित्य से छात्रों को परिचित कराना ।**
- **हिंदी सिनेमा से छात्रों को परिचित कराना ।**
- **विश्व सिनेमा से छात्रों को अवगत कराना ।**

इकाई -I सिनेमा का स्वरूप एवं विकास :-

- **सिनेमा की व्युत्पत्ति,अर्थ एवं परिभाषाएँ**
- **सिनेमा का विकासात्मक परिचय:-**
- **मूक सिनेमा**
- **सवाक् सिनेमा**
- **स्वातंत्र्योत्तर सिनेमा**
- **समानांतर सिनेमा**
- **समकालीन सिनेमा**

इकाई -II साहित्य सिनेमा और फिल्मांतरण :-

- **तीसरी कसम - (कहानी) फणीश्वरनाथ रेणु निर्देशक - बासू भट्टाचार्य**
- **रजनीगंधा - मन्नु भंडारी निर्देशक बासू चटर्जी**

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. विश्व सिनेमा का सौंदर्यबोध - सं.श्रीराम तिवारी/प्रभुनाथ आजमी

२. सिनेमा संगीत का इतिहास - स्वामी वाहिद काजमी

३. सिनेमा कल,आज,कल- विनोद भारद्वाज

४.अभिनव सिनेमा-प्रचण्ड प्रवीर

५.हिंदी सिनेमा नीति और अनीति- डॉ.विरेंद्र सक्सेना

६.सिनेमा और साहित्य -हरीश कुमार

७.साहित्य समाज और हिंदी सिनेमा-डॉ.सुनील बापू बनसोडे

८. साहित्य और सिनेमा बदलते परिदृश्य में संभावनाएँ और चुनौतियाँ - डॉ.शैलजा भारव्दाज

९. सिनेमा और फिल्मांतरित हिंदी साहित्य - डॉ. गोकुळ क्षीरसागर

१०. हिंदी साहित्य और सिनेमा - डॉ. विवेक दुबे

११.हिंदी साहित्य और फिल्मांकन - डॉ. रामदास तोंडे

१२.विषय चलचित्र - सत्यजित राय

१३. भारतीय चलचित्र - डॉ. महेन्द्र मित्तल

१४.फिल्म निर्देशन -कुलदीप सिन्हा

१५. सिनेमा पढ़ने के तरीके - विष्णु खरे

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-**
    १. छात्र हिंदी साहित्य से परिचित हुए।
    २.हिंदी सिनेमा से छात्रों का परिचय हुआ ।
    ३. विश्व सिनेमा से छात्रों को अवगत हुए ।

--------- ||| ----------

तृतीय सत्र : ऑडिट पाठ्यक्रम

AC-303 (B) हिंदी वेब पत्रकारिता

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- हिंदी वेब पत्रिकारिता के स्वरूप और व्याप्ति के संदर्भ में छात्रों को परिचित कराना ।
- हिंदी वेब पत्रकारिता हेतु आवश्यक कौशल पर प्रकाश डालना ।
- हिंदी वेब पत्रकारिता की संभावनाओं से छात्रों को अवगत कराना ।
- वेब डिज़ाइन के बारे में छात्रों को मूलभूत ज्ञान प्रदान करना ।

इकाई -I हिंदी वेब पत्रकारिता का स्वरूप और व्याप्ति :-

- वेब पत्रकारिता क्या है ?
- वेब पत्रकारिता के टूल्स
- वेब पत्रकारिता में सामग्री
- वेब पत्र-पत्रिकाओं का सामान्य वर्गीकरण
- वेब पत्रकारिता की विशेषताएँ

इकाई -II हिंदी वेब पत्रकारिता :

- वेब पोर्टल के लिए संवाद लेखन और संपादन
- वेब संपादन : कुछ मूलमंत्र
- वेब समाचार पत्र के आवश्यक तत्व
- वेब डिजाईन
- वेब पत्रों की भाषा तथा वेब पत्रकारिता में रोजगार की संभावनाएँ
- वेब डिज़ाइन : मुखपृष्ठ, विज्ञापन, ग्राफिक्स,पृष्ठांकन आदि।

- **सहायक ग्रंथ सूची :-**

१. वेब पत्रकारिता : नया मीडिया नए रूझान - शालीनी जोशी/शिवप्रसाद जोशी

२. मीडिया भाषा - लीला रवीकांत

३. विज्ञान पत्रकारिता - डॉ. मनोज पटेरिया

४. हिंदी पत्रकारिता -अनुशब्द

५. वेब पत्रकारिता -श्याम माथुर

६. पत्रकारिता के उत्तर आधुनिक चरण -कृपाशंकर चौबे

७. हिंदी पत्रकारिता स्वरूप और संदर्भ - विनोद गोदरे
८. हिंदी पत्रकारिता का बृहद इतिहास - अर्जुन तिवारी
९. हिंदी पत्रकारिता हमारी विरासत खण्ड -2 शंभुनाथ

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-
    १.हिंदी वेब पत्रिकारिता के स्वरूप और व्याप्ति को छात्रों ने जाना।
    २.हिंदी वेब पत्रकारिता हेतु आवश्यक कौशल को छात्रों ने आत्मसात किया ।
    ३.हिंदी वेब पत्रकारिता की संभावनाओं से छात्र अवगत हुए ।
    ४. वेब डिज़ाइन के बारे में छात्रों को मूलभूत ज्ञान प्राप्त हुआ।

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

चतुर्थ सत्र पाठ्यक्रम

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN 401 लंबी कविता एवं ग़ज़ल

पाठयक्रम का उददेश्य :-

- आधुनिक हिन्दी की लंबी कविता तथा ग़ज़ल के सैध्दांतिकी से छात्रों को परिचित करवाना।
- छात्रों को प्रातिनिधिक आधुनिक लंबी कविताओं और ग़ज़लों से परिचित करवाना।
- लंबी कविता और ग़ज़लों के माध्यम से छात्रों में संवेदनशीलता,सहदयता, राष्ट्रीयता,मानवता आदि मानवीय मूल्यों को विकसित करना।
- आधुनिक हिन्दी की कालजयी लंबी कविताओं और ग़ज़लों से छात्रों को परिचित करवाना।

इकाई – I लंबी कविता की सैध्दांतिकी

- लंबी कविता परिभाषा और स्वरूप, अर्थ :
- लंबी कविता के प्रमुख तत्व
- लंबी कविता की विकास यात्रा
- प्रमुख लंबी कविताओं और कवियों का सामान्य परिचय

इकाई – II हिन्दी की प्रातिनिधिक लंबी कविताएँ

- सरोज स्मृति – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
- हरिजन गाथा –नागार्जुन
- प्यारी बहना –नरेन्द्र मोहन
- ब्रूनों की बेटियाँ – आलोक धन्वा

इकाई – III ग़ज़ल की सैध्दांतिकी

- ग़ज़ल : अर्थ ,परिभाषा और स्वरूप
- ग़ज़ल के अंग
- हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा
- हिन्दी के प्रमुख कालजयी ग़ज़लकार तथा उनकी ग़ज़लों का सामान्य परिचय

इकाई – IV प्रातिनिधिक हिन्दी ग़जलकार तथा उनकी ग़ज़लें

हिन्दी ग़ज़ल के पंचरत्न - डॉ. मधु खराटे, विदया प्रकाशन,कानपुर

- गोपालदास नीरज : अब तो इक ऐसा वरक मेरा-तेरा ईमान हो, अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाये
- अदम गौंडवी : जो 'डलहौजी' न कर पाया वो ये हुक्काम कर देंगे,हिन्दू या मुस्लिम के एहसासात को मत छेडिए
- ज्ञानप्रकाश विवेक : किसी के दुख में रो उठूँ कुछ ऐसी तर्जुमानी दे, जिन्दगी के लिए इक खास सलीका रखना
- ओमप्रकाश यती : "हम भी खुश थे जब वे जीते,लेना एक न देना दो","दुख तो गाँव मुहल्ले के भी हरते आए बाबुजी"

❖ **डॉ. भावना : हमें अपना बताये जा रहे हैं , जो करके बँद आँखों को यहाँ चुपचाप बैठे हैं।**

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- **सरोज स्मृति – सूर्यकांत त्रि पाठी निराला**
- **दुनिया रोज बनती है – आलोक धन्वा**
- **कविता से लंबी कविता –विनोदकुमार शुक्ल**
- **निराला और मुक्तिबोध चार लंबी कविताएँ –नंद किशोर नवल**
- **नागार्जुन और लंबी कविता- नंद कि शोर नवल**
- **लंबी कविताएँ : वैचारिक सरोकार –डॉ.बलदेव वंशी**
- **लंबी कविताओं का रचना विधान-सं.डॉ.नरेंद्र मोहन**
- **लंबी कविताएँ और नरेंन्द्र मोहन- डॉ.रमेश सोनी .**
- **तीन लंबी कविताएँ – डॉ.संजय ढोढरे**
- **अज्ञेय से अरूण कमल भाग १ और भाग २ – डॉ. संतोष कुमार तिवारी**
- **लंबी कविता की पहचान –प्रताप सहगल - http://gadykosh.org**
- **लंबी कविता कोश http://kavitakosh.org.**
- **हिन्दी ग़ज़ल के पंचरत्न - डॉ. मधु खराटे, विदया प्रकाशन,कानपुर**
- **हिन्दी ग़ज़ल : उदभव एवं विकास – डॉ.रोहिताश्व आस्थाना**
- **साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल – डॉ खराटे मधु.**
- **हिन्दी कविता में ग़ज़ल : संवेदना और शिल्प- डॉ.जे.पी.गंगवार**

--- ||| ---

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

चतुर्थ *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-402 विमर्शमूलक साहित्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ समकालीन साहित्य विमर्श में दलित विमर्श की सैद्धांतिक पृष्टभूमि पर प्रकाश डालना |
- ✓ समकालीन साहित्य विमर्श में आदिवासी विमर्श के योगदान को स्पष्ट करना |
- ✓ दलित विमर्श के प्रातिनिधि कहानी संकलन का अध्ययन करना |
- ✓ आदिवासी विमर्श के प्रातिनिधिक उपन्यास का विवेचन एवं विश्लेषण की बहुविध संकल्पनाओं को विशद करना |

इकाई-I स्त्री विमर्श :

- अर्थ, परिभाषा तथा स्वरूप, स्त्री विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि, स्त्री विमर्श प्रेरणा एवं प्रभाव।
- प्रातिनिधिक रचना स्त्री विमर्श - कविता सदी आधुनिक हिन्दी कविता का प्रतिनिधि संचयन सम्पादक सुरेश सलिल (राजपाल एण्ड सन्ज़,नई दिल्ली)

पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित चुनिंदा कविताएँ :-

१.सुमित्राकुमारी सिन्हा : - अज्ञात,पतिवाली विधवा से ।
२.कीर्ति चौधरी : - बरसते हैं मेघ झर -झर ,स्वयंचेता
३. स्नेहमयी चौधरी : - उपस्थित,दुविधा ।
४.कात्यायनी : हॉकी खेलती लडकियाँ, सात भाईयों के बीच चम्पा, प्रसव -पीड़ा

इकाई -II दलित विमर्श :

- अर्थ, परिभाषा और स्वरूप, दलित विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि, दलित विमर्श की मूल प्रवृत्तियाँ, हिन्दी दलित साहित्य का विकासात्मक परिचय,हिन्दी दलित साहित्य प्रेरणा और प्रभाव ।
- प्रातिनिधिक रचना : दलित विमर्श : दलित कहानी संचयन - सम्पादन रमणिका गुप्ता (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)

पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित कहानियाँ :-

१. ओमप्रकाश वाल्मीकि -पच्चीस चौका डेढ़ सौ
२. मोहनदास नैमिशराय - अपना गाँव
३. जयप्रकाश कर्दम -नो बार
४. सुशीला टाकभौरे -सिलिया
५. प्रल्हाद चंद्र दास- लटकी हुई शर्त
६. रत्न कुमार सांभरिया - फुलवा
७. कावेरी- सुमंगली

इकाई -III आदिवासी विमर्श :

- **अर्थ , परिभाषा और स्वरूप, आदिवासी समाज की प्रमुख विशेषताएँ , आदिवासी समाज समस्याएँ ,विकास और प्रश्न, हिन्दी साहित्य में आदिवासी संस्कृति का चित्रण |**
- **प्रातिनिधिक रचना : ग्लोबल गाँव के देवता (उपन्यास) - रणेंद्र (भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली)**

इकाई -IV किन्नर विमर्श :

- **अर्थ , परिभाषा और स्वरूप, उदभव एवं विकास ,प्रमुख रचनाकरों का सामान्य परिचय।**
- **प्रातिनिधिक रचना : ज़िन्दगी 50-50 भगवंत अनमोल राजपाल ,एंड सन्स १५९० मदरसा रोड कश्मिरी गेट दिल्ली**

- **सहायक संदर्भ सूची :**

१. भारतीय दलित आंदोलन का इतिहास -चार खण्ड - मोहनदास नैमिशराय
२. दलित साहित्य : अनुभव, संघर्ष और यथार्थ - ओमप्रकाश वाल्मीकि
३. दलित साहित्य विधा : शास्त्र और इतिहास- डॉ. बापूराव देसाई
४.दलित साहित्य स्वरूप और संवदेनाएँ - डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे
५. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श- सं. डॉ.शिवाजी देवरे
६. भारतीय दलित साहित्य - संपादन शरणकुमार लिंबाले
७. मुख्यधारा और दलित साहित्य -ओमप्रकाश वाल्मीकि
८. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र - ओमप्रकाश वाल्मीकि
९. दलित विमर्श की भूमिका -सं.कंवल भारती
१०.इक्कीसवीं सदी में दलित चिंतन - डॉ. जयप्रकाश कर्दम
११. दलित साहित्य एक मूल्यांकन - प्रो चमनलाल
१२. आदिवासी साहित्य यात्रा - रमणिका गुप्ता
१३. उत्तर औपनिवेशीकता के स्त्रोत और हिन्दी साहित्य-प्रणय कृष्ण
१४.हिन्दी साहित्य : नव विमर्श- डॉ.पंड्या
१५. समकालीन साहित्य विमर्श- डॉ. सुनील कुलकर्णी
१६.आदिवासी विमर्श केन्द्रीत हिन्दी साहित्य-सं. डॉ. उषाकीर्ति राणावत
१७. आदिवासी स्वर और नई शताब्दी- सं. रमणिका गुप्ता
१८. आदिवासी लोक भाग-१ और २ - सं. रमणिका गुप्ता
१९. दलित समस्या की राजनीति-ब्रजकुमार पाण्डेय
२०. हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श- डॉ. पं.बन्ने
२१. दलित दर्शन - रमणिका गुप्ता /ज्ञान सिंह बल
२२.दलित विमर्श -डॉ.धीरज भाई वणक
२३. भारत में नारी की बदलती हुई वैदिक स्थिति -डॉ. अजयकुमार सिंह
२४. स्त्री विमर्श के बुनियादी सवाल- डॉ. कमलेश सिंह नेगी

२५.नारी समस्या और समाधान -डॉ.सीता बिम्बॉ
२६. थर्ड जेंडर और ५०-५० सं.डॉ.एम फिरोज खान, विकास प्रकाशन कानपुर
२७. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श - डॉ.मधु खराटे विद्या प्रकाशन
२८. हिंदी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श संपादक डॉ.लिल्हारे डॉ.पटेल, वान्या पब्लिकेशन कानपुर
२९. थर्ड जेंडर अस्मिता और संघर्ष संपादक डॉ. विजयेन्द्र प्रताप सिंह अमन प्रकाशन कानपुर
३०.किन्नर विमर्श साहिय और समाज संपादक मिनल बिष्णोई विद्या प्रकाशन ,कानुपर
३१.साहित्य और समाज में किन्नर जीवन - राम डगे गंगाधर पीराजी विद्या प्रकाशन, कानपुर
३२. समकालीन साहित्य में किन्नर विमर्श और अन्य संदर्भ : डॉ.अनु पांडेय,माया प्रकाशन,कानपुर
३३. तिसरी दूनिया का यथार्थ एक मूल्यांकन संपादक डॉ.जयश्री एस टी.

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-
    १.समकालीन साहित्य विमर्श में दलित विमर्श के सैद्धांतिक पृष्टभूमि को छात्रों ने समझा |
    २.समकालीन साहित्य विमर्श में आदिवासी विमर्श के योगदान को छात्रों ने आत्मसात किया |
    ३.दलित विमर्श के प्रातिनिधि कहानी संकलन का अध्ययन किया |
    ४. आदिवासी विमर्श के प्रातिनिधिक उपन्यास का विवेचन एवं विश्लेषण की बहुविध संकल्पनाओं को छात्रों ने जाना |

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

चतुर्थ *सत्र पाठ्यक्रम*

मुख्यांश अनिवार्य पाठ्यक्रम (Core Course)

HIN-403 भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ **भाषा विज्ञान का सैद्धांतिक विवेचन करना |**
- ✓ **भाषा विज्ञान के विविध अंगों का सामान्य परिचय कराना |**
- ✓ **रूप ,रूपिम,वाक्य तथा अर्थ विज्ञान का सामान्य परिचय देना |**

इकाई -I - भाषा विज्ञान की अवधारणा एवं उपशाखाएँ :-

- **भाषा विज्ञान की परिभाषा एवं स्वरूप ।**
- **भाषा विज्ञान की उपशाखाएँ: कोश विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान, लिपि विज्ञान, मनोभाषा विज्ञान, भाषा भूगोल का संक्षिप्त परिचय |**

इकाई -II -स्वन एवं स्वनिम विज्ञान :-

- **स्वन एवं स्वनिम विज्ञान - स्वन का स्वरूप ।**
- **स्वन का उत्पादन संवहन और ग्रहण ।**
- **वाग्वयव और उच्चारण प्रक्रिया ।**
- **स्वनों का वर्गीकरण: स्वर और व्यंजन ।**
- **स्वन परीवर्तन के कारण एवं दिशाएँ ।**
- **स्वनिम का स्वरूप,स्वनिम के भेद |**

इकाई - III- रूप एवं रूपिम विज्ञान :-

- **रूप (पद) की परिभाषा ।**
- **संबंध तत्व और उसक भेद।**
- **रूपिम का स्वरूप, रूपिम के भेद |**

इकाई -IV - वाक्य विज्ञान और अर्थ विज्ञान :-

- **वाक्य का स्वरूप**
- **अभिहितान्वयवाद (पदवाद)**
- **वाक्य के भेद**
- **वाक्य विश्लेषण,**
- **निकटस्थ अवयव विश्लेषण,**

- **अर्थ एवं प्रोक्ति विज्ञान- अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, अर्थ बोध के बाधक तत्व, अर्थ प्रतिति के कारण, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ | प्रोक्ति विज्ञान : प्रोक्ति से तात्पर्य, प्रोक्ति के विविध प्रकार, प्रोक्ति की अशुध्दियाँ आदि।**

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. भाषा विज्ञान- डॉ. भोलानाथ तिवारी
२. हिन्दी भाषा- डॉ. भोलानाथ तिवारी
३ भाषा विज्ञान -डॉ. तेजपाल चौधरी
४.भाषा विज्ञान- डॉ. रामस्वरूप खरे
५.भाषिक हिन्दी भाषा तथा भाषा शिक्षण- डॉ. अंबादास देशमुख
६.भाषा विज्ञान- डॉ. डी. एम. दोमडिया
७. हिन्दी भाषा- डॉ. भोलानाथ तिवारी
८. भाषा विज्ञान के अधुनातन आयाम एवं हिन्दी भाषा- डॉ. अंबादास देशमुख
९. भाषा विज्ञान एक अध्ययन- गरिमा श्रीवास्तव
१०.भाषा विज्ञान : हिन्दी भाषा- डॉ. सुरेश सिंहल
११. भाषा विज्ञान का रसायन- कैलाशनाथ पाण्डेय
१२.भाषा विज्ञान: हिन्दी भाषा और लिपि-रामकिशोर शर्मा
१३. भाषा चिन्तन के नये आयाम -रामकिशोर शर्मा
१४.आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धान्त- -रामकिशोर शर्मा

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - **उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-**
    १.भाषा विज्ञान के सैद्धांतिक विवेचन से छात्र अवगत हुए |
    २.भाषा विज्ञान के विविध अंगों को छात्रों ने समझा |
    ३. छात्रों को रूप ,रूपिम,वाक्य तथा अर्थ विज्ञान का सामान्य परिचय हुआ |

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष
चतुर्थ सत्र पाठ्यक्रम
वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course : Skill Based/)
HIN - 404 (A) अनुवाद विज्ञान

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

1. अनुवाद की अवधारणा से छात्रों परिचित करना।
2. अनुवाद की प्रविधि, प्रक्रिया और सिद्धांत से अवगत करना।
3. अनुवाद का महत्त्व और प्रासंगिकता को समझाना।
4. साहित्यिक विधाओं का छात्रों द्वारा प्रकल्प लेखन के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुवाद करवाना।
5. साहित्येत्तर विभिन्न सेवा क्षेत्रों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलियों का व्यावहारिक ज्ञान संपादन करने हेतु छात्रों से उनका प्रत्यक्ष अनुवाद करवाना।

इकाई – I अनुवाद की अवधारणा

- अनुवाद : अर्थ परिभाषा
- अनुवाद : विशेषताएँ , समस्याएँ और समाधान
- अनुवाद : विज्ञान या कला
- अनुवादक के गुण

इकाई II अनुवाद के विविध आयाम

- अनुवाद के प्रकार : शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, गद्यानुवाद, पद्यानुवाद
- अनुवाद का महत्त्व और प्रासंगिकता
- अनुवाद के विभिन्न आयाम या क्षेत्र
- अनुवाद प्रक्रिया, प्रविधि और सिद्धांत

इकाई III साहित्यिक अनुवाद

- काव्यानुवाद : अवधारणा, समस्या और समाधान
- कथा साहित्य का अनुवाद : अवधारणा, समस्या और समाधान
- नाटक का अनुवाद : अवधारणा, समस्या और समाधान
- साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ

इकाई IV साहित्येत्तर अनुवाद

- मानविकी और सामाजिक विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली (50 शब्द)

- मीडिया तथा विज्ञान प्राद्योगिकी की पारिभाषिक शब्दावली (50 शब्द)
- प्रशासन एवं विधि की पारिभाषिक शब्दावली (50 शब्द)
- बैंक तथा वाणिज्यिक पारिभाषिक शब्दावली (50 शब्द)

पाठ्यक्रम की उपादेयता

1. अनुवाद की अवधारणा से छात्र परिचित हुए।
2. अनुवाद की प्रविधि, प्रक्रिया और सिद्धांत से अवगत हुए।
3. अनुवाद का महत्त्व और प्रासंगिकता को समझे।
4. साहित्यिक विधाओं का छात्रों द्वारा प्रकल्प लेखन के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुवाद किया।
5. साहित्येत्तर विभिन्न सेवा क्षेत्रों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावलियों का व्यावहारिक ज्ञान संपादन करने हेतु छात्रों ने उनका प्रत्यक्ष अनुवाद किया।

संदर्भ ग्रंथ –

1. अनुवाद सिद्धांत – इग्नु पाठ्यपुस्तक
2. अनुवाद और साहित्य – इग्नु पाठ्यपुस्तक
3. अनुवाद के क्षेत्र – इग्नु पाठ्यपुस्तक
4. कोशविज्ञान, पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद – इग्नु पाठ्यपुस्तक
5. अनुवाद के विविध परिप्रेक्ष्य- डॉ. राम गोपाल सिंह

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष

चतुर्थ सत्र पाठ्यक्रम

वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course: Skill Based/)

HIN - 404 (B) अनूदित साहित्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- ✓ अनुवाद का सैध्दांतिक विवेचन करना।
- ✓ अनूदित साहित्य के सिध्दांत एवं व्यवहार को समझाना।
- ✓ हिन्दी मराठी तथा हिन्दी और और तमिल साहित्य के अनूदित साहित्य का अन्त : संबंध स्पष्ट करना।
- ✓ हिन्दी –मराठी तथा हिन्दी और तमिल साहित्य में स्थित साम्य भेदों का विवेचन करना।
- ✓ मराठी से हिन्दी में तथा तमिल से हिन्दी में अनूदित साहित्य का विकासात्मक परिचय देना।
- ✓ मराठी से हिन्दी में तथा तमिल से हिन्दी में अनूदित साहित्य कृतियों के माध्यम से दो भाषाओं,प्रदेशों की सांस्कृतिक परंपरा को जानना और समझना।

इकाई -I अनुवाद :-

- अनुवाद : परिभाषा ।
- अनुवाद की विशेषताएँ ।
- अनुवाद के प्रकार।
- अनुवादक के गुण
- अनुवाद : समस्याएँ और समाधान ।

इकाई -II अनूदित साहित्य :-

- अनुवाद : विज्ञान अथवा कला ।
- अनुवाद का महत्व ।
- अनुवाद की प्रक्रिया प्रविधि और सिध्दांत ।
- अनुवाद के उपकरण ।
- अनुवाद की विभिन्न शैलियाँ ।

इकाई -III प्रातिनिधिक अनूदित साहित्य कृति - उपन्यास विधा (मराठी से हिंदी)

- सनातन (अनूदित उपन्यास) – शरणकुमार निबांळे अनुवाद पदमजा घोरपडे वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली

इकाई -IV प्रातिनिधिक अनूदित साहित्य कृति - कहानी विधा *(तमिल से हिन्दी)*

अधूरे मनुष्य –डी.. जयकान्तन , (अनूदित कहानी संकलन) हिन्दी रूपांतरण डॉ.के.ए.जमुना भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली

सूचना : प्रस्तुत संकलन की अग्नि प्रवेश,पूरब और पश्चिम, अंत:करण पवित्र होता है इन तीन कहानियों को छोड़कर अन्य आठों कहानियाँ अध्ययनार्थ रखी गई हैं।

▪ सहायक संदर्भ सूची :

१. हिन्दी में अनूदित मराठी दलित आत्मकथा- डॉ. गोरख काकडे

२. हिन्दी और मराठी का श्रृंगारकाल- डॉ. इंद्र पवार

३. हिन्दी और मराठी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन- डॉ-मिर्जा असदबेग रूस्तुम बेग

४.प्रादेशिक भाषा और साहित्य इतिहास- डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

५.हिन्दी तथा मराठी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन- शांतिस्वरूप गुप्त

६.भारतीय साहित्य- डॉ. ब्रजकिशोरप्रसाद सिंह

७.आधुनिक मराठी साहित्य का प्रवृत्तिमूलक इतिहास- डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

८.अनुवाद समस्याएँ और संदर्भ-सं. बलवंत जेउक्कर

९. प्रेमचंद और हरिनारायण आपटे के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन- डॉ. कुमारी प्रमिला गुप्त

१०. प्रादेशिक भाषा साहित्य :मराठी पहचान और परख- गुलाबराव हाडे

११.हिन्दी और मराठी दलित साहित्य: एक मूल्याकंन - सुनीता साखरे

१२. हिन्दी साहित्य में दलित अस्मिता- स्नेही कालीचरण

१३. तुलनात्मक साहित्य भारतीय परिप्रेक्ष्य -इन्द्रनाथ चौधुरी

१४.अनुवाद विज्ञान : सिध्दांत एवं प्रविधि - भोलानाथ तिवारी

१५. प्रयोजनमूल हिंदी और पत्रकारिता - डॉ. दिनेश प्रसाद सिंह

१६.हिंदी-मराठी का अनूदित साहित्य-डॉ.सुधाकर शेंडगे

● पाठ्यक्रम की उपादेयता :

- उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-
  - ✓ अनुवाद का सैध्दांतिक विवेचन करना।
  - ✓ अनूदित साहित्य के सिध्दांत एवं व्यवहार को समझाना।
  - ✓ हिन्दी मराठी साहित्य के तथा हिन्दी और तमिल साहित्य के अन्त : संबंध से छात्र परिचित हुए ।
  - ✓ हिन्दी –मराठी तथा हिन्दी और तमिल . के साहित्य में स्थित साम्य भेदों को छात्रों ने जाना |
  - ✓ छात्रों को मराठी से हिन्दी में तथा तमिल से हिन्दी में अनूदित साहित्य का विकासात्मक परिचय हुआ |

--------- ||| ----------

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष
चतुर्थ सत्र पाठ्यक्रम
वैकल्पिक पाठ्यक्रम : कौशल विकास संवर्धन (Elective Course: Skill Based/)
HIN - 404 (C) भारतीय संत काव्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

- **भारतीय संत काव्य का परिचय कराना।**
- **भारतीय संत काव्य परंपरा के विकास से छात्रों को परिचति कराना।**
- **भारत के प्रमुख संतों के काव्य से छात्रों को अवगत कराना।**
- **भारत की प्रमुख महिला संत कवयित्रियों के काव्य से छात्रों को अबगत कराना।**
- **भारतीय संत काव्य के माध्यम से भारतीयत्व,राष्ट्रीयत्व का बोध कराना।**

- **इकाई - I भारतीय संत काव्य : सैध्दांतिक विवेचन**
  १. **भारतीय संत काव्य : उद्‌भव एवं विकास**
  २. **भारतीय संत : प्रमुख विशेषताएँ**
  ३. **सामाजिक समरसता में भारतीय संतों का योगदान**
  ४. **भारतीय संत काव्य की प्रासंगिकता एवं महत्व**
- **इकाई - II प्रमुख भारतीय संत कवि : सामान्य परिचय**
  १. **संत तिरूवल्लूवर - तमिलनाडू**
  २. **संत बसवेश्वर - कर्नाटक**
  ३. **संत नामदेव - महाराष्ट्र**
  ४. **संत कबीर - उत्तर प्रदेश**
  ५. **संत नरसी मेहता- गुजरात**
  ६. **संत रैदास - राजस्थान**
- **इकाई - III प्रमुख भारतीय संत कवयित्रियाँ : सामान्य परिचय**
  १. संत अंडाल - तमिलनाडू
  २. संत अक्कमहादेवी - कर्नाटक
  ३. संत मीराबाई - राजस्थान
  ४. संत लल्लेश्वरी - कश्मीर
  ५.संत मुक्ताबाई - महाराष्ट्र
  ६.संत ताज बिबी - उत्तर प्रदेश
- **इकाई - IV प्रमुख भारतीय संत कवि एवं कवयित्रियों के काव्य का परिचय :-**
  भारतीय संत काव्य इस संपादित पाठ्य पुस्तक में संकलित कवियों एवं कवयित्रियों की काव्य रचनाएँ :-

- संत तिरूवल्लूवर : कुरल
- संत बसवेश्वर : वचन
- संत नामदेव : अभंग
- संत कबीर : पद
- संत नरसी मेहता :भजन
- संत रैदास : अभंग
- संत कवयित्री आंडाल : पद
- संत कवयित्री अक्कमहादेवी : वचन
- संत कवयित्री मीराबाई : भजन
- संत कवयित्री लल्लेयवरी : वाख
- संत कवयित्री मुक्ताबाई : अभंग
- संत कवयित्री ताज बीबी : पद

- **संदर्भ पुस्तकों की सूची :**

१. हिंदी के जनपद संत - जगवजीवन राम
२. भारत की महिला संत - वासंती साळवेकर
३. भारतीय नारी संत परंपरा -बलदेव वंशी
४.भक्ति के आयाम - डॉ.पी.जयरामन
५.कबीर मीमांसा - डॉ.रामचंद्र तिवारी
६.संत साहित्य की आधुनिक अवधारणाएँ - डॉ. सुनील कुलकर्णी
७. भक्तिकाल की प्रासंगिकता -डॉ.संजय शर्मा
८.भक्तिकाल के कालजयी रचनाकार- डॉ.विष्णुदास वैष्णव
९.भारतीय भक्ति साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक समरसता- संपादक डॉ. सुनील कुलकर्णी
सामाजिक समरसता के अग्रदूत संत कवि- डॉ. सुनील कुलकर्णी
१०. भारतीय संत काव्य -संपादक डॉ. सुनील कुलकर्णी

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :-**

- भारतीय संत काव्य से छात्र परिचित हुए।
- भारतीय संत काव्य परंपरा के विकास का ज्ञान छात्रों को प्राप्त हुआ।
- भारत के प्रमुख संतों के काव्य से छात्र अवगत हुए।
- भारत की प्रमुख महिला संत कवयित्रियों के काव्य से छात्र अवगत हुए।
- भारतीय संत काव्य के माध्यम से छात्रों में भारतीयत्व,राष्ट्रीयत्व का बोध जागृत हुआ।

--- ॥॥ ---

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष
चतुर्थ सत्र : ऑडिट कोर्स पाठ्यक्रम
AC-403 (A) रचनात्मक लेखन

- **पाठ्यक्रम के उद्देश्य :**
  - ✓ छात्रों में रचनात्मक लेखन के प्रति रूचि विकसित कराना ।
  - ✓ रचनात्मक लेखन के स्वरूप और सिध्दांत पर प्रकाश डालना ।
  - ✓ रचनात्मक लेखन में भाषिक संदर्भ के महत्व को समझाना ।
  - ✓ रचनात्मक लेखन के रचना सौष्ठव और विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यवहारिक परिचय देना ।

इकाई -I रचनात्मक लेखन : स्वरूप एवं सिध्दांत

- भाव एवं विचार की रचना में रूपांतरण की प्रक्रिया
- विविध अभिव्यक्ति क्षेत्र : साहित्य,पत्रकारिता,विज्ञापन, विविध गद्य अभिव्यक्तियाँ
- जनभाषा और लोकप्रिय संस्कृति
- लेखन के विविध रूप : मौखिक-लिखित, गद्य-पद्य,कथात्मक-कथेत्तर,नाट्य और पाठ्य
- रचनात्मक लेखन - भाषा-संदर्भ : अर्थ निर्मिति के आधार : शब्दार्थ मिमांसा,शब्द के प्राक्-प्रयोग,नव्य-प्रयोग

इकाई - II रचनात्मक लेखन : रचना-कौशल-विश्लेषण विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यवहारिक अध्ययन

- रचना-सौष्ठव : शब्दशक्ति,प्रतीक,विंब,अंलकार और वक्रताएँ
- विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यवहारिक अध्ययन :-
  कविता कहानी,उपन्यास,नाटक,कथेतर गद्य विधाएँ ।

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. भाषा शिक्षण की रचनात्मक एवं आलोचनात्मक दृष्टि - वीरेन्द्र सिंह रावत आयुष प्रकाशन ,गाजियाबाद.

२. सर्जनात्मक लेखन - डॉ हरिश आरोड़ा

३. आधारभूत हिंदी संरचना तथा अभ्यास पुस्तिका (2015) प्रो.अरूण चतुर्वेदी ,केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा

४. बालक में भाषा का विकास - सुगन भाटिया, केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा

५. भाषा अनुरक्षण एवं भाषा विस्थापन (1986) श्री.कृष्ण (संपा.) केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**

उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नांकिंत लाभ हुए :-

१.छात्रों में रचनात्मक लेखन के प्रति जागृकता निर्माण हुई ।

२.छात्रों ने रचनात्मक लेखन के स्वरूप और सिध्दांत का सामान्य परिचय प्राप्त किया ।

३.रचनात्मक लेखन में भाषिक संदर्भ के महत्व को समझा ।

४.रचनात्मक लेखन के रचना सौष्ठव और विविध विधाओं की आधारभूत संरचनाओं का व्यवहारिक परिचय प्राप्त किया ।

--- ॥॥ ---

एम.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष
चतुर्थ सत्र : ऑडिट कोर्स पाठ्यक्रम
AC-404 (B) हिंदी मानक वर्तनी तथा प्रुफ शोधन

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- मानक वर्तनी का समान्य परिचय कराना ।
- मानक वर्तनी के अद्यवत नियमो की जानकारी देना ।
- प्रुफ शोधन की सैध्दांतिकी के बारे में छात्रों को अवगत कराना ।
- प्रुफ शोधन के अद्यवत नियमों और चिन्हों की छात्रों को जानकारी देना ।

इकाई - I मानक हिंदी वर्णमाल तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण :-

- मानक हिंदी वर्णमाल तथा अंक
- संयुक्त वर्ण
- कारक चिह्न या परसर्ग
- संयुक्त क्रियापद
- योजक चिह्न (हाइफ़न)
- अव्यय
- अनुस्वार (शिरोबिंदु) तथा अनुनासिक चिह्न (चंद्रबिंदु)
- विसर्ग (:), हल् चिह्न (्)
- स्वन परिवर्तन
- 'ए' और 'औ ' का प्रयोग
- पूवकालिक कृदंत प्रत्यय 'कर '
- 'वाला' प्रत्यय
- श्रुतिमूलक 'य ', 'व '
- विदेशी ध्वनियाँ
- हिंदी में आगत शब्दों की मानक वर्तनी
- विरामादि चिह्न तथा यूनी कोड और देवनागरी

इकाई -II प्रूफ-शोधन के प्रकार :-

- ग्रंथों का समाचार पत्रों का प्रूफ-शोधन
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के लिए प्रूफ-शोधन
- प्रूफ-शोधन हेतु आवश्यक गुण तथा योग्यताएँ :-
    - भाषा तथा व्याकरण का ज्ञान
    - शब्द तथा अर्थ का ज्ञान
    - वाक्यशुध्दि का ज्ञान
    - विराम् चिन्हों तथा अवतरण चिन्हों का ज्ञान
    - प्रूफ-शोधन और संगणक

- **सहायक ग्रंथ सूची :**

१. मानक हिंदी संरचना एवं प्रयोग -रामप्रकाश

२. मानक हिंदी के शुध्द प्रयोग - भाग -1 रमेशचंन्द्र मेहरोत्रा

३. हिंदी में अशुध्दियाँ -रमेशचंन्द्र मेहरोत्रा

४. हिंदी की मानक वर्तनी - कैलाशचन्द्र भाटिया

५. देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण - केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली संस्करण 2016

- **पाठ्यक्रम की उपादेयता :**
  - उपर्युक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्रों को निम्नाकिंत लाभ हुए :-
    १. छात्रों ने हिंदी मानक वर्तनी का समान्य परिचय प्राप्त किया ।
    २.मानक वर्तनी के अद्यवत नियमों से छात्र अवगत हुए ।
    ३.प्रुफ शोधन के सैध्दांतिकी के बारे में छात्रों परिचित हुए ।
    ४. प्रुफ शोधन के अद्यवत नियमों और चिन्हों की छात्रों को जानकारी प्राप्त हुई।

डॉ. सुनील बाबुराव कुलकर्णी

विभागाध्यक्ष हिंदी

Filename:	M.A
Directory:	C:\Users\CLL\Documents
Template:	C:\Users\CLL\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:	
Subject:	
Author:	CLL
Keywords:	
Comments:	
Creation Date:	6/14/2022 5:55:00 PM
Change Number:	174
Last Saved On:	6/23/2022 2:21:00 PM
Last Saved By:	CLL
Total Editing Time:	446 Minutes
Last Printed On:	6/23/2022 2:22:00 PM

As of Last Complete Printing

Number of Pages:	64
Number of Words:	14,271 (approx.)
Number of Characters:	81,346 (approx.)